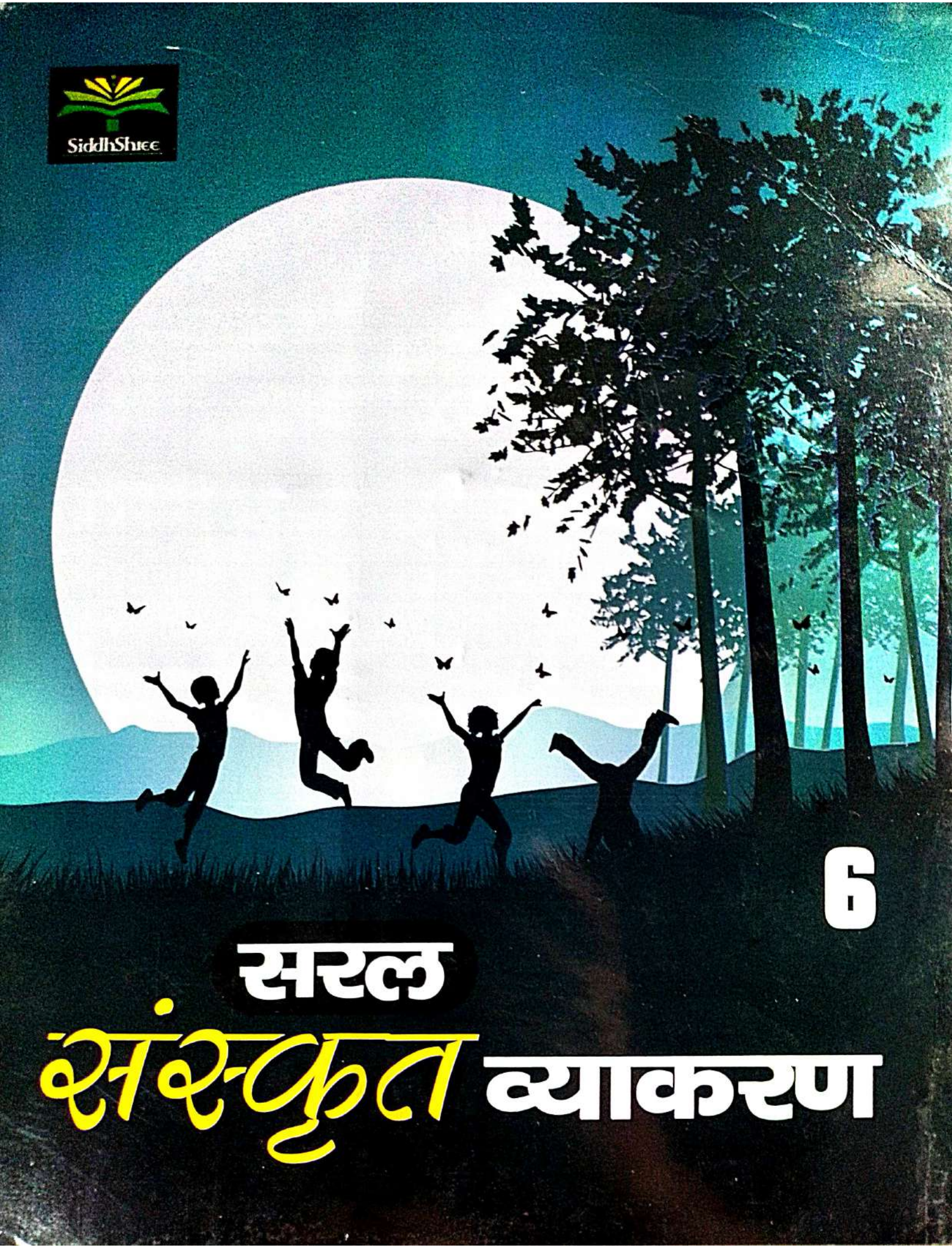
SiddhShree
6
सरल
संस्कृत व्याकरण

SiddhShree

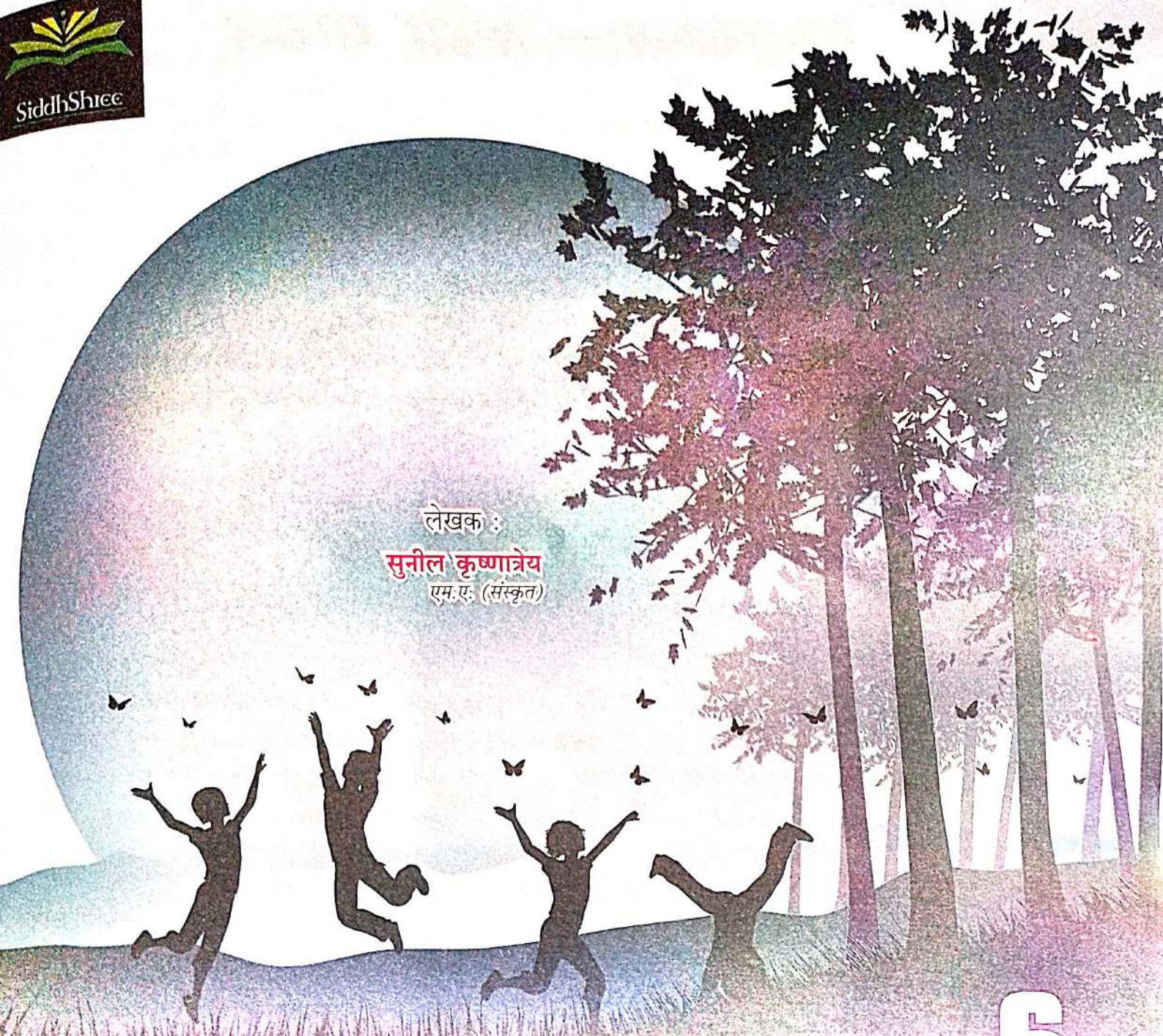

लेखक :

सुनील कृष्णात्रेय

एम.ए. (संस्कृत)

6

सरल संस्कृत व्याकरण

पाठ्यक्रमः— कक्षा षष्ठम्

1. संज्ञा — ऋकारान्त पुल्लिङ्ग - पितृ, कर्तृ।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग - मति, गति।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग - नदी, भगिनी।

इकारान्त व उकारान्त नपुंसकलिङ्ग - वारि, मधु।

2. सर्वनाम — तत्, एतत् शब्द के तीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में (रूप परिचय) प्रायोगिक विधियों के माध्यम से।

3. विशेषण — संख्यावाची - 22 से 50 तक

क्रमवाचक पूरणी - प्रथम से दशम तक तीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में प्रायोगिक ज्ञान।

4. कारक — कारकों का सामान्य परिचय।

उभयतः, परितः, सर्वतः, नमः, उपरि इन पदों के साथ उपयुक्त उपपद विभक्ति का प्रयोग।

5. क्रिया — लङ् (भूत) लकार।

पूर्वपठित धातुओं के अतिरिक्त कृ, चर्, वस्, रक्ष्, पूज्।

स्म का प्रयोग-भूतकाल का अर्थ सूचित करने के लिए लट् लकार क्रिया पद के प्रथम पुरुष के साथ स्म का प्रयोग।

6. अव्यय — अलम्, अन्तः, बहिः, अधः, उपरि, उच्चैः, नीचैः, कदापि, पुनः।

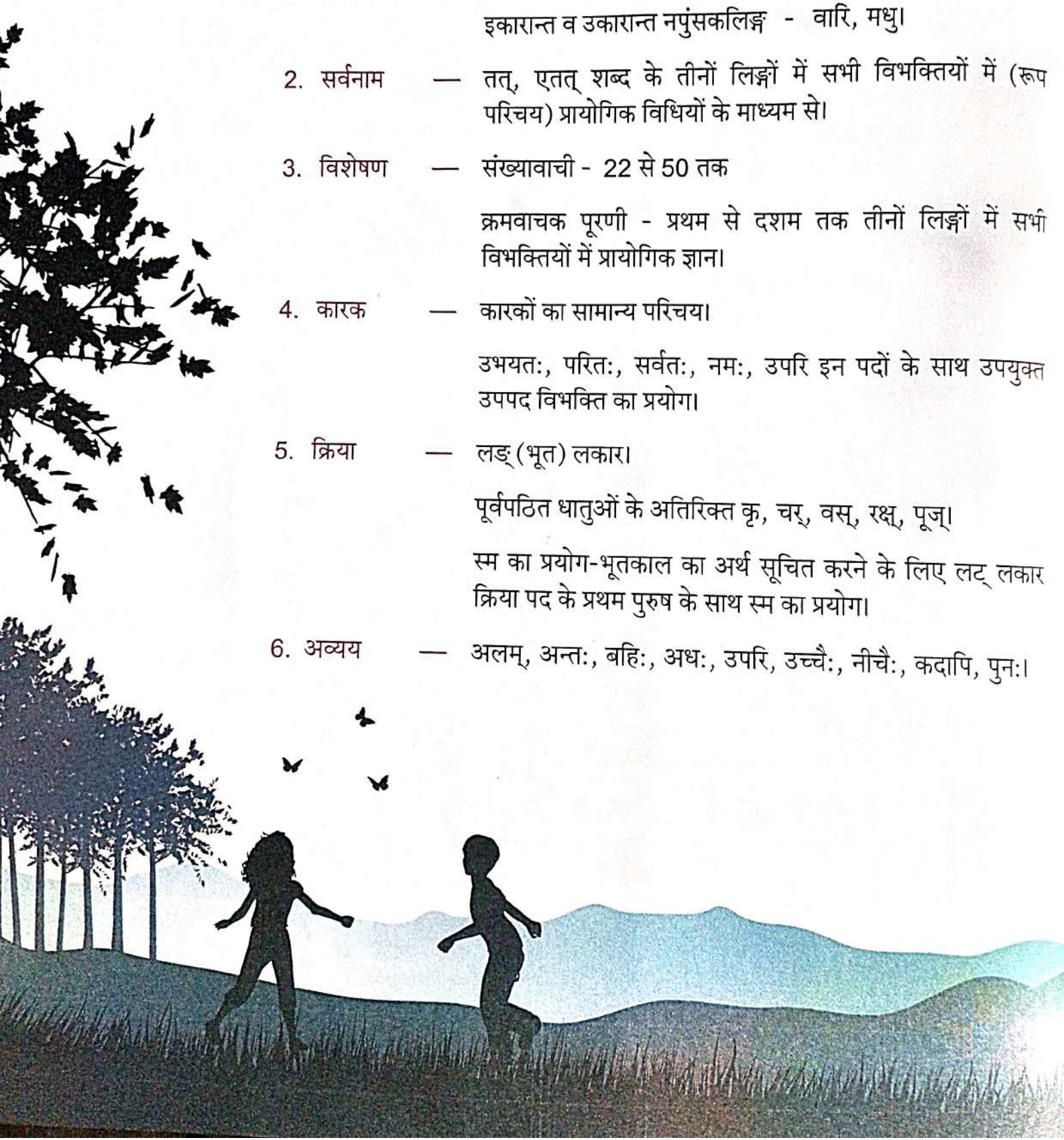

निवेदनम्

संस्कृत की ज्ञान-गंगा को पीने का हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। संसार की ऐसी कोई भी भाषा मिलनी कठिन है जिसने किसी देश के इतिहास, संस्कृति और जीवन को इतना प्रभावित किया हो जितना संस्कृत ने। संस्कृत की वे दुर्लभ विशेषताएँ भी हैं, जो भूतकाल की तरह ही हमारे वर्तमान और भविष्यत् जीवन को भी समृद्ध, तेजस्वी, लोकहितकारी और मङ्गलमय बनाने में सहयोग प्रदान कर सकती हैं।

केन्द्रीय-विद्यालय-संगठन, दिल्ली ने केन्द्रीय विद्यालयों में अनिवार्य संस्कृत-शिक्षण का जो शुभ संकल्प किया है उसी को चरितार्थ करने के लिए यह पुस्तक-माला (कक्षा प्रवेशिका से 8 तक) प्रस्तुत की जा रही है। इस पुस्तक माला में संगठन द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम की मूलभूत भावना, निर्देशों तथा स्वीकृत उद्देश्यों के पूर्ण पालन का प्रत्यन किया गया है। इसकी कतिणय विशेषताएँ निम्नांकित हैं—

संगठन के निर्देशों का पालन—

1. पुस्तक की पाठ्य-वस्तु लगभग निर्धारित पृष्ठों तक ही सीमित है।
2. पाठ्य-सामग्री के सम्बन्ध में सामान्य-जीवन के अनुभ्व तथा बालाकों के परिवेश का पूर्ण ध्यान रखा गया है इस सम्बन्ध में भी पूर्ण जागरूकता दिखाई गयी है कि छात्रों में एक भी पक्ति से किसी भी प्रकार की सकुंचित एवं साम्प्रदायिक भावना का प्रसार न हो तथा भावनात्मक एकता की प्रबल गड़ा सभी के दिलों में बह उठे। वे एक सार्वभौम मानवीय संस्कृति के निष्ठावान बनने के लिए प्रेरित हो।
3. पाठ यथासम्भव आकार में छोटे, राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों पर आधारित तथा भारत की प्राचीन संस्कृति के परिचायक हैं।
4. पाठों की भाषा क्लिप्ट शब्दों और सन्धियों से रहित, सरल तथा साहित्यक दृष्टि से सरस है। पाठों में विविधता का पूर्ण ध्यान रखा गया है।
5. पुस्तक की शब्दावली बालकों के परिसर के आधार पर चुनी गयी है। इसमें अधिकांशत- हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।
6. सबसे अधिक विशेषता की बात यह है कि सगृ-थन प्रणाली पर आधारित होते हुए भी पाठों को मनोरंजक, सरस और विचारोत्तेजक बनाने का प्रयत्न किया गया है। मनोरंजक होते हुए भी पाठ सतवृत्तियों के विकास में सहायक है।

—लेखक एवं प्रकाशक

अनुक्रमणिका

1. व्याकरण – एक परिचय (Grammar : An Introduction) ... 5
2. लिङ्ग तथा वचन (Gender and Number) ... 8
3. सन्धि (Joining) ... 11
4. लिङ्ग (Gender) ... 15
5. शब्द रूप (Declension) ... 17
6. धातु–रूप (Root Form) ... 25
7. कारक तथा उपपद विभक्ति (Case and Case Signs) ... 43
8. अव्यय (Indeclinable) ... 48
9. समास (Compound) ... 51
10. अनुवाद (Translation) ... 54
11. पत्र लेखन (Letter Writing) ... 59
12. निबन्ध लेखन (Essay Writing) ... 61
13. कहानी लेखन (Story Writing) ... 63

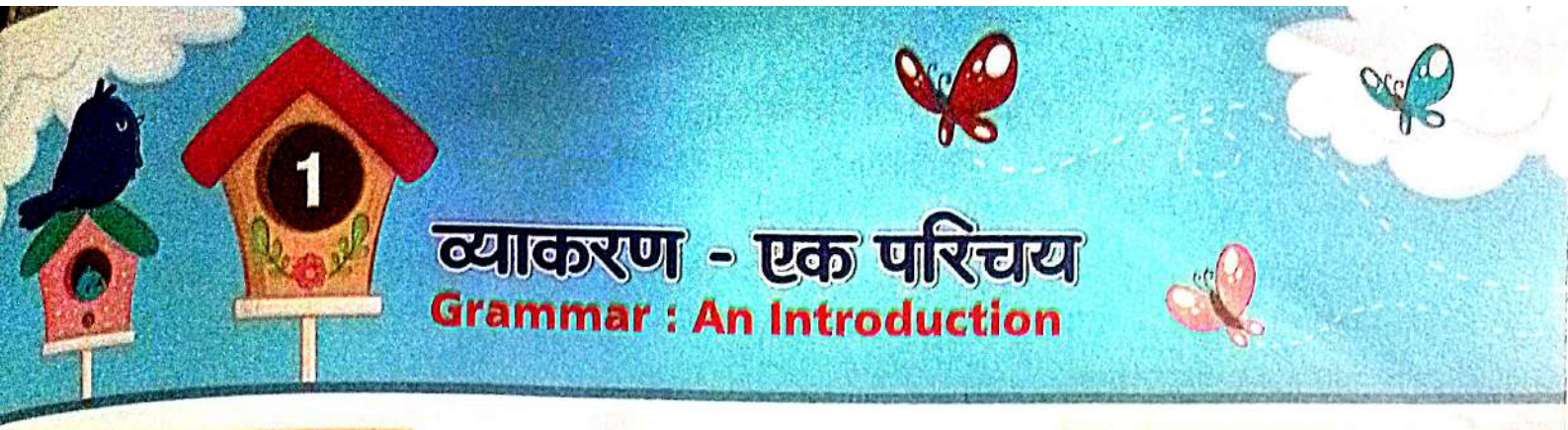

1 व्याकरण - एक परिचय
Grammar : An Introduction

भाषा (Language)

हम अपने विचारों को परस्पर बोलकर प्रकट करते हैं। एक शिशु अपनी आवश्यकताओं को रोकर अथवा हँसकर बताता है। एक गूंगा या बधिर व्यक्ति संकेतों द्वारा अपनी बात को समझाता है कि उसे भोजन चाहिए, पानी चाहिए या किसी प्रकार का कष्ट है। लेकिन इन संकेतों अथवा रोने, हँसने या अन्य प्रकार की ध्वनियों को 'भाषा' (Language) नहीं कहा जा सकता। अत: हम कह सकते हैं कि—

"भाषा ऐसा सशक्त साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार अथवा भावनाएँ प्रकट कर सकता है तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण कर सकता है ?"

भाषा को हम दो प्रकार से प्रकट कर सकते हैं—

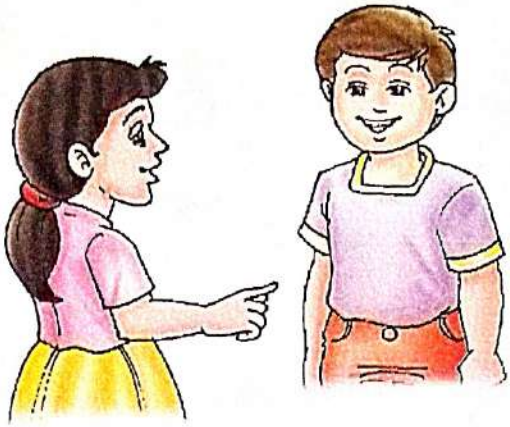

1. बोलकर अर्थात् (मौखिक)

2. लिखकर अर्थात् (लिखित)

भाषा को लिखित रूप में प्रयुक्त करते समय कुछ विशेष चिह्नों तथा ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है, इस लिखित रूप को 'लिपि' कहते हैं।

"हिन्दी एवं संस्कृत की लिपि देवनागरी है।"

व्याकरण (Grammar)— किसी भी भाषा के शुद्ध ज्ञान के लिए भाषा का व्याकरण समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण ही हमें शुद्ध बोलना, पढ़ना तथा लिखना सिखाती है।

वर्ण— छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके खण्ड न किए जा सकें वर्ण (Letter) कहलाती है।

भाषा के प्रमुख तीन अंग होते हैं—

1. वर्ण   2. शब्द   3. वाक्य

1. वर्ण (Letter)— छोटी से छोटी ध्वनि जिसके और खण्ड न किए जा सके 'वर्ण' (Letter) कहलाती है।

2. शब्द (Word)— वर्णों के सार्थक संयोग से शब्द बनते हैं; जैसे— स् + आ + ग् + अ + र् + अ = सागर। निरर्थक शब्दों पर व्याकरण में कोई भी विचार नहीं होता बल्कि जिन शब्दों का अर्थ हो अर्थात् सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है।

3. वाक्य (Sentence)— सार्थक शब्दों के सुव्यवस्थित समूह को वाक्य (Sentences) कहते हैं जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट होता है।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्णों के क्रमिक समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। संस्कृत वर्णमाला में तीन प्रकार के वर्ण आते हैं—

1. स्वर 2. व्यंजन 3. अयोगवाह

1. स्वर— जो वर्ण (अक्षर) बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं; उदाहरण के लिए अ, इ, उ स्वर हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं—

(क) ह्रस्व स्वर (Short Vowels)— जिन शब्दों के उच्चारण करने में एक मात्रा का समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहे जाते हैं। इनकी संख्या केवल चार हैं— अ, इ, उ, ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये आठ हैं— आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

2. व्यंजन (Consonants)— जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते, उन्हें व्यंजन कहते हैं। क, ख आदि व्यंजन हैं। इन्हें बोलने के लिए 'अ' अथवा कोई अन्य स्वर मिलाकर बोला जाता है। स्वर रहित व्यंजनों में निम्नलिखित प्रकार से हलन्त लगाकर लिखा जाता है—

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं—

(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अन्त:स्थ व्यंजन (ग) ऊष्म व्यंजन

(क) स्पर्श (Mutes)— जिन वर्णों का उच्चारण करने में जीभ, दन्त तथा ओंठ आदि का स्पर्श होता है, उन्हें स्पर्श कहते हैं। स्पर्श व्यंजन पाँच भागों में बँटे हुए हैं। वर्ग का नाम पहले वर्ण के नाम पर रखा गया है—

क वर्ग — क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	**च वर्ग** — च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	**ट वर्ग** — ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त वर्ग — त्, थ्, द्, ध्, न्	**प वर्ग** — प्, फ्, ब्, भ्, म्	

(ख) अंत:स्थ व्यंजन (Sense Vowels)— जिन वर्णों का उच्चारण बहुत थोड़ी टकरावट से होता है। उन्हें अन्त:स्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है—

य्, र्, ल्, व्

(ग) ऊष्म व्यंजन (Sibilants)— जिन वर्णों का उच्चारण करने में गरम वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहा जाता है। ये भी चार होते हैं—

श्, ष्, स्, ह्

3. अयोगवाह (Improper Letters)— जो वर्ण स्वरों या उनकी मात्राओं को लगाने के बाद ही अपना रूप प्रकट करते हैं, उन्हें अयोगवाह कहते हैं।

अयोगवाह दो प्रकार के होते हैं—

(क) अनुस्वार— अं, डं, उं के ऊपर लगा हुए बिन्दु वर्ण अनुस्वार हैं जो उच्चारण करते समय तार की झंकार के समान लगते हैं; जैसे— संवेदना, शंकर, संहार।

(ख) विसर्ग— अः, इः, उः के साथ दो बिन्दुओं के रूप में लगा वर्ण विसर्ग है; जैसे— प्रातः, दुःख, पुनः।

सम्पूर्ण वर्णमाला क्रम से

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त्, थ्, द्, ध्, न्
प्, फ्, ब्, भ्, म्
य्, र्, ल्, व्
श्, ष्, स्, ह्

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. वर्णों के क्रमबद्ध समूह को क्या कहते हैं ?

_____

2. व्याकरण के कितने अंग होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

_____

3. निम्नलिखित शब्दों को परिभाषित कीजिए—

वर्ण _____ शब्द _____

वाक्य _____

4. किसी भाषा के व्याकरण का ज्ञान होना क्यों आवश्यक है ?

_____

5. लिपि से आप क्या समझते हैं ?

_____

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) किसी भी छोटी-से-छोटी ध्वनि को _____ कहते हैं। *(वर्ण, शब्द)*

(ख) शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान _____ के बिना असम्भव है। *(बोली, व्याकरण)*

(ग) संस्कृत एक _____ है। *(भाषा, लिपि)*

(घ) व्याकरण में _____ शब्दों पर ही विचार किया जाता है। *(सार्थक, अर्थहीन)*

2. शब्द (Word)— वर्णों के सार्थक संयोग से शब्द बनते हैं; जैसे— स् + आ + ग् + अ + र् + अ = सागर। निरर्थक शब्दों पर व्याकरण में कोई भी विचार नहीं होता बल्कि जिन शब्दों का अर्थ हो अर्थात् सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है।

3. वाक्य (Sentence)— सार्थक शब्दों के सुव्यवस्थित समूह को वाक्य (Sentences) कहते हैं जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट होता है।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्णों के क्रमिक समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। संस्कृत वर्णमाला में तीन प्रकार के वर्ण आते हैं—

1. स्वर 2. व्यंजन 3. अयोगवाह

1. स्वर— जो वर्ण (अक्षर) बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं; उदाहरण के लिए अ, इ, उ स्वर हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं—

(क) ह्रस्व स्वर (Short Vowels)— जिन शब्दों के उच्चारण करने में एक मात्रा का समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहे जाते हैं। इनकी संख्या केवल चार हैं— अ, इ, उ, ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये आठ हैं— आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

2. व्यंजन (Consonants)— जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते, उन्हें व्यंजन कहते हैं। क, ख आदि व्यंजन हैं। इन्हें बोलने के लिए 'अ' अथवा कोई अन्य स्वर मिलाकर बोला जाता है। स्वर रहित व्यंजनों में निम्नलिखित प्रकार से हलन्त लगाकर लिखा जाता है—

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं—

(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अन्त:स्थ व्यंजन (ग) ऊष्म व्यंजन

(क) स्पर्श (Mutes)— जिन वर्णों का उच्चारण करने में जीभ, दन्त तथा ओंठ आदि का स्पर्श होता है, उन्हें स्पर्श कहते हैं। स्पर्श व्यंजन पाँच भागों में बँटे हुए हैं। वर्ग का नाम पहले वर्ण के नाम पर रखा गया है—

क वर्ग — क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	**च वर्ग** — च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	**ट वर्ग** — ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त वर्ग — त्, थ्, द्, ध्, न्	**प वर्ग** — प्, फ्, ब्, भ्, म्	

(ख) अंत:स्थ व्यंजन (Sense Vowels)— जिन वर्णों का उच्चारण बहुत थोड़ी टकरावट से होता है। उन्हें अन्त:स्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है—

य्, र्, ल्, व्

(ग) ऊष्म व्यंजन (Sibilants)— जिन वर्णों का उच्चारण करने में गरम वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहा जाता है। ये भी चार होते हैं—

श्, ष्, स्, ह्

2. शब्द (Word)— वर्णों के सार्थक संयोग से शब्द बनते हैं; जैसे— स् + आ + ग् + अ + र् + अ = सागर। निरर्थक शब्दों पर व्याकरण में कोई भी विचार नहीं होता बल्कि जिन शब्दों का अर्थ हो अर्थात् सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है।

3. वाक्य (Sentence)— सार्थक शब्दों के सुव्यवस्थित समूह को वाक्य (Sentences) कहते हैं जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट होता है।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्णों के क्रमिक समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। संस्कृत वर्णमाला में तीन प्रकार के वर्ण आते हैं—

1. स्वर 2. व्यंजन 3. अयोगवाह

1. स्वर— जो वर्ण (अक्षर) बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं; उदाहरण के लिए अ, इ, उ स्वर हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं—

(क) ह्रस्व स्वर (Short Vowels)— जिन शब्दों के उच्चारण करने में एक मात्रा का समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहे जाते हैं। इनकी संख्या केवल चार हैं— अ, इ, उ, ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये आठ हैं— आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

2. व्यंजन (Consonants)— जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते, उन्हें व्यंजन कहते हैं। क, ख आदि व्यंजन हैं। इन्हें बोलने के लिए 'अ' अथवा कोई अन्य स्वर मिलाकर बोला जाता है। स्वर रहित व्यंजनों में निम्नलिखित प्रकार से हलन्त लगाकर लिखा जाता है—

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं—

(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अन्त:स्थ व्यंजन (ग) ऊष्म व्यंजन

(क) स्पर्श (Mutes)— जिन वर्णों का उच्चारण करने में जीभ, दन्त तथा ओंठ आदि का स्पर्श होता है, उन्हें स्पर्श कहते हैं। स्पर्श व्यंजन पाँच भागों में बँटे हुए हैं। वर्ग का नाम पहले वर्ण के नाम पर रखा गया है—

क वर्ग — क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	**च वर्ग** — च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	**ट वर्ग** — ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त वर्ग — त्, थ्, द्, ध्, न्	**प वर्ग** — प्, फ्, ब्, भ्, म्	

(ख) अंत:स्थ व्यंजन (Sense Vowels)— जिन वर्णों का उच्चारण बहुत थोड़ी टकरावट से होता है। उन्हें अन्त:स्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है—

य्, र्, ल्, व्

(ग) ऊष्म व्यंजन (Sibilants)— जिन वर्णों का उच्चारण करने में गरम वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहा जाता है। ये भी चार होते हैं—

श्, ष्, स्, ह्

3. अयोगवाह (Improper Letters)— जो वर्ण स्वरों या उनकी मात्राओं को लगाने के बाद ही अपना रूप प्रकट करते हैं, उन्हें अयोगवाह कहते हैं।

अयोगवाह दो प्रकार के होते हैं—

(क) अनुस्वार— अं, डं, उं के ऊपर लगा हुए बिन्दु वर्ण अनुस्वार हैं जो उच्चारण करते समय तार की झंकार के समान लगते हैं; जैसे— संवेदना, शंकर, संहार।

(ख) विसर्ग— अः, इः, उः के साथ दो बिन्दुओं के रूप में लगा वर्ण विसर्ग है; जैसे— प्रातः, दुःख, पुनः।

सम्पूर्ण वर्णमाला क्रम से

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त्, थ्, द्, ध्, न्
प्, फ्, ब्, भ्, म्
य्, र्, ल्, व्
श्, ष्, स्, ह्

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. वर्णों के क्रमबद्ध समूह को क्या कहते हैं ?

_____

2. व्याकरण के कितने अंग होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

_____

3. निम्नलिखित शब्दों को परिभाषित कीजिए—

वर्ण _____ शब्द _____

वाक्य _____

4. किसी भाषा के व्याकरण का ज्ञान होना क्यों आवश्यक है ?

_____

5. लिपि से आप क्या समझते हैं ?

_____

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) किसी भी छोटी-से-छोटी ध्वनि को _____ कहते हैं। *(वर्ण, शब्द)*

(ख) शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान _____ के बिना असम्भव है। *(बोली, व्याकरण)*

(ग) संस्कृत एक _____ है। *(भाषा, लिपि)*

(घ) व्याकरण में _____ शब्दों पर ही विचार किया जाता है। *(सार्थक, अर्थहीन)*

2 लिङ्ग तथा वचन
Gender and Number

बालकः (पुल्लिङ्ग)

बालिका (स्त्रीलिङ्ग)

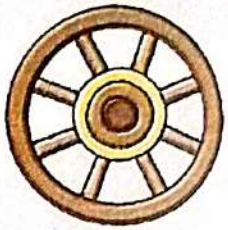

चक्रम् (नपुंसकलिङ्ग)

संस्कृत भाषा में शब्दों को लिङ्ग के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है—

1. पुल्लिङ्ग
2. स्त्रीलिङ्ग
3. नपुंसक लिङ्ग

1. पुल्लिङ्ग (Masculine Gender)— जिन शब्दों के द्वारा पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिङ्ग कहते हैं।

बालकः (बालक)

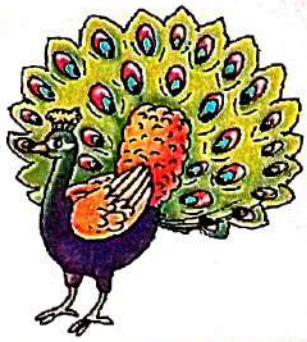

मयूरः (मोर)

शुकः (तोता)

2. स्त्रीलिङ्ग (Feminine Gender)— जिन शब्दों के द्वारा स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं।

नौका (नाव)

ललना (महिला)

चटका (चिड़िया)

3. नपुंसक लिङ्ग (Neuter Gender)— वे शब्द जो न पुल्लिङ्ग होते हैं और न स्त्रीलिङ्ग होते है, उन्हें नपुंसक लिङ्ग कहते हैं।

आम्रम् (आम)

पुष्पम् (फूल)

पुस्तकम् (पुस्तक)

वचन (Number)

जिन शब्दों के द्वारा उनकी संख्या का ज्ञान हो उन्हें वचन कहते हैं। संस्कृत भाषा में तीन वचन होते हैं— एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

बालिका (एक लड़की)

बालिके (दो लड़कियाँ)

बालिका: (अनेक लड़कियाँ)

एकवचन (Singular)— जिन शब्दों के द्वारा केवल एक संख्या का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।

द्विवचन (Dual)— जिन शब्दों के द्वारा दो संख्याओं का बोध होता है, उन्हें द्विवचन कहते हैं।

बहुवचन (Plural)— जिन शब्दों के द्वारा दो से अधिक संख्याओं का बोध होता है, उन्हें बहुवचन कहते हैं।

अजा (एक बकरी)
शुक: (एक तोता)

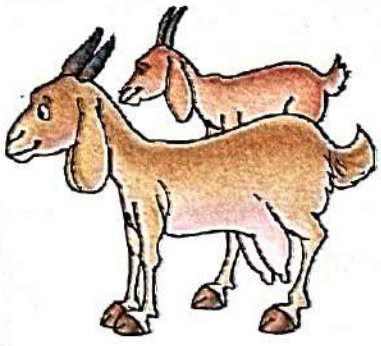

अजे (दो बकरियाँ)
शुकौ (दो तोते)

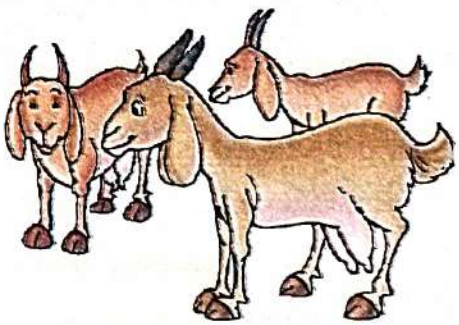

अजा: (कई बकरियाँ)
शुका: (कई तोते)

पुरुष (Person)

संस्कृत भाषा में तीन पुरुष होते हैं—

1. प्रथम पुरुष (Third Person)— जो व्यक्ति बात कर रहा हो तथा जो सुन रहा हो उसके अतिरिक्त या उससे अन्य व्यक्ति प्रथम पुरुष अथवा अन्य पुरुष कहलाते हैं।

उदाहरण–

सः पठति।	वह पढ़ता है।	He reads.
तौ पठतः।	वे दोनों पढ़ते हैं।	They (two read).
ते पठन्ति।	वे सब पढ़ते हैं।	They (all read).

2. मध्यम पुरुष (Second Person)— वक्ता (बात करने वाला) जिससे बात करें वह मध्यम पुरुष कहलाता है।

उदाहरण–

त्वं पठसि।	(तुम पढ़ते हो।)
यूवां पठथः।	(तुम दोनों पढ़ते हो।)
यूयं पठथः।	(तुम सब पढ़ते हो।)

3. उत्तम पुरुष (First Person)— वक्ता (बात करने वाला) उत्तम पुरुष कहलाता है।

उदाहरण–

अहं पठामि।	(मैं पढ़ता हूँ।)
आवां पठावः।	(हम दोनों पढ़ते हैं।)
वयं पठामः।	(हम सब पढ़ते हैं।)

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. लिङ्ग कितने प्रकार के होते हैं ?

2. वचन के दो उदाहरण देते हुए इसके प्रकार लिखिए।

3. पुरुष कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

4. सही कथन पर (✓) व गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए—
   (क) संस्कृत में पाँच पुरुष होते हैं।
   (ख) संस्कृत में वचन दो प्रकार के होते हैं।
   (ग) जिन शब्दों से पुरुषत्व का बोध हो उन्हें पुल्लिङ्ग कहते हैं।
   (घ) जिन शब्दों से स्त्रीत्व या पुरुषत्व दोनों का बोध न हो वे नपुंसक होते हैं।

3 सन्धि
Joining

जब दो शब्द पास में आकर मिलते हैं तो उनमें कुछ विकार अर्थात् परिवर्तन आ जाता है, उस परिवर्तन को 'सन्धि' कहते हैं।

संस्कृत भाषा में तीन प्रकार की सन्धि होती है—

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

1. स्वर सन्धि— जब दो स्वर अत्यधिक समीप होते हैं तो उनमें होने वाला परिवर्तन स्वर सन्धि कहलाता है। कक्षा छः के पाठ्यक्रम में स्वर सन्धि के चार भेदों को दिया गया है।

(क) दीर्घ सन्धि– ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ वर्णों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आ जाएँ तो दोनों के स्थान पर दीर्घ अक्षर (आ, ई, ऊ, ॠ) होता है—

उदाहरण–

अ	+	अ	=	आ	—	परम	+	अर्थः	=	परमार्थः
						अत्र	+	अपि	=	अत्रापि
अ	+	आ	=	आ	—	हिम	+	आलयः	=	हिमालय
						देव	+	आलयः	=	देवालयः
आ	+	अ	=	आ	—	कदा	+	अपि	=	कदापि
						विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
आ	+	आ	=	आ	—	विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः
						महा	+	आनन्दः	=	महानन्दः
इ	+	इ	=	ई	—	मुनि	+	इन्द्रः	=	मुनीन्द्रः
						कवि	+	इन्द्रः	=	कवीन्द्रः
इ	+	ई	=	ई	—	कपि	+	ईशः	=	कपीशः
						गिरि	+	ईशः	=	गिरीशः
ई	+	इ	=	ई	—	सुधी	+	इन्द्रः	=	सुधीन्द्रः
						महती	+	इच्छा	=	महतीच्छा

ई	+	ई	=	ई	—	नदी	+	ईशः	=	नदीशः
						मही	+	ईशः	=	महीशः
उ	+	उ	=	ऊ	—	भानु	+	उदयः	=	भानूदयः
उ	+	ऊ	=	ऊ	—	लघु	+	ऊर्मिः	=	लघूर्मिः
ऊ	+	उ	=	ऊ	—	वधू	+	उत्सवः	=	वधूत्सवः
ऊ	+	ऊ	=	ऊ	—	वधू	+	ऊर्मिः	=	वधूर्मिः
ऋ	+	ऋ	=	ॠ	—	मातृ	+	ऋणम्	=	मातॄणम्
						पितृ	+	ऋणम्	=	पितॄणम्

(ख) गुण सन्धि– अ अथवा आ के पश्चात् इ, ई, उ, ऊ, ऋ हो तो दोनों के स्थान पर ए, ओ, अर् हो जाता है–

उदाहरण–

अ	+	इ	=	ए	—	नर	+	इन्द्रः	=	नरेन्द्रः
						सुर	+	इन्द्रः	=	सुरेन्द्रः
अ	+	ई	=	ए	—	गण	+	ईशः	=	गणेशः
						नर	+	ईशः	=	नरेशः
आ	+	इ	=	ए	—	राजा	+	इन्द्रः	=	राजेन्द्रः
						लता	+	इव	=	लतेव
आ	+	ई	=	ए	—	रमा	+	ईशः	=	रमेशः
						महा	+	ईश्वरः	=	महेश्वरः
अ	+	उ	=	ओ	—	पर	+	उपकारः	=	परोपकारः
						सूर्य	+	उदयः	=	सूर्योदयः
आ	+	उ	=	ओ	—	गंगा	+	उदकम्	=	गंगोदकम्
						यमुना	+	उदकम्	=	यमुनोदकम्
अ	+	ऊ	=	ओ	—	एक	+	ऊनम्	=	एकोनम्
						नव	+	ऊढा	=	नवोढा
आ	+	ऊ	=	ओ	—	यमुना	+	ऊर्मिः	=	यमुनोर्मिः
						गंगा	+	ऊर्मिः	=	गंगोर्मिः
अ	+	ऋ	=	अर्	—	देव	+	ऋषिः	=	देवर्षिः
						सप्त	+	ऋषिः	=	सप्तर्षिः

(ग) वृद्धि सन्धि– अ या आ के बाद ए, ऐ हों तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है तथा ओ, औ होने पर दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

उदाहरण–

अ	+	ए	=	ऐ	—	कृष्ण	+	एकत्वम्	=	कृष्णैकत्वम्
						एक	+	एकम्	=	एकैकम्
आ	+	ए	=	ऐ	—	लता	+	एक:	=	लतैक:
अ	+	ऐ	=	ऐ	—	मत	+	ऐक्यम्	=	मतैक्यम्
						अत्र	+	ऐश्वर्यम्	=	अत्रैश्वर्यम्
आ	+	ऐ	=	ऐ	—	तथा	+	ऐक्यम्	=	तथैक्यम्
अ	+	ओ	=	औ	—	जन	+	ओघ:	=	जनौघ:
						जल	+	ओघ:	=	जलौघ:
आ	+	ओ	=	औ	—	गंगा	+	ओघ:	=	गंगौघ:
						महा	+	ओघ:	=	महौघ:
अ	+	औ	=	औ	—	राम	+	औदार्यम्	=	रामौदार्यम्
						परम	+	औत्सुक्यम्	=	परमौत्सुक्यम्
आ	+	औ	=	औ	—	महा	+	औषधम्	=	महौषधम्
						राजा	+	औदार्यम्	=	राजौदार्यम्

(घ) यण सन्धि– ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद यदि कोई अन्य स्वर हो तो इ, उ, ऋ, ऌ के स्थान पर क्रमश: य्, व्, र्, ल् हो जाते हैं—

उदाहरण–

इ	+	स्वर	=	य्	+	स्वर	—	इति	+	आदि	=	इत्यादि
								इति	+	अत्र	=	इत्यत्र
ई	+	स्वर	=	य्	+	स्वर	—	कवि	+	अत्र	=	कव्यत्र
								देवी	+	अत्र	=	देव्यत्र
उ	+	स्वर	=	व्	+	स्वर	—	सु	+	आगतम्	=	स्वागतम्
								मधु	+	अरि	=	मध्वरि:
ऊ	+	स्वर	=	व्	+	स्वर	—	वधू	+	अपि	=	वध्वपि
								वधू	+	अत्र	=	वध्वत्र
ऋ	+	स्वर	=	र्	+	स्वर	—	मातृ	+	उपदेश:	=	मात्रुपदेश:
								पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा
ऌ	+	स्वर	=	ल्	+	स्वर	—	ऌ	+	आदेश:	=	लादेश:

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. सन्धि की परिभाषा तथा उनके प्रकार लिखिए।

2. प्रत्येक सन्धि के तीन-तीन उदाहरण लिखिए।

3. स्वर सन्धि किसे कहते हैं ?

4. दीर्घ सन्धि के चार उदाहरण लिखिए।

5. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

वागतम्	_____	वधूत्सवः	_____
महेश्वरः	_____	विशालयः	_____
चन्द्रोदयः	_____	पित्रोदेवः	_____

6. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए—

महा + औदार्यम्	_____	विद्या + आलयः	_____
नर + ईशः	_____	जल + ओघः	_____
सूर्य + उदयः	_____	इति + आदि	_____

4 लिङ्ग Gender

द्वितीय अध्याय में संस्कृत के लिङ्ग तीन होते हैं, बताया जा चुका है। लिङ्ग की अच्छी जानकारी के लिए नीचे तालिका दी गई है। छात्रगण ध्यान दें—

1. अकारान्त शब्द या तो पुल्लिङ्ग होते हैं अथवा नपुसंक लिङ्ग होते हैं।

निम्नलिखित शब्द पुल्लिङ्ग हैं—

कपोत	—	कबूतर	खग	—	पक्षी
वानर	—	बन्दर	अर्चक	—	पुजारी
मातुल	—	मामा	सुत	—	पुत्र
उष्ट्र	—	ऊँट	अनल	—	अग्नि
कोक	—	चकवा	कुक्कुट	—	मुर्गा
कवि	—	कवि	काक	—	कौआ
हर	—	शंकर	भल्लूक	—	भालू
मण्डूक	—	मेंढक	नर	—	मनुष्य

निम्नलिखित शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं—

वदन	—	मुख	पय	—	दूध
अमृत	—	जल, अमृत	उदक	—	जल
विष	—	जहर	वृत्त	—	चरित्र
रजत	—	चाँदी	बाल्य	—	बचपन
जठर	—	पेट	पुस्तक	—	पुस्तक
फल	—	फल	दर्पण	—	शीशा
अञ्जन	—	सुरमा	तोय	—	जल

2. आकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं—

जाया	—	स्त्री	अर्चना	—	पूजा
अम्बा	—	माता	आत्मजा	—	पुत्री
गंगा	—	नदी	उग्रता	—	भयानकता
अविद्या	—	अज्ञान	अचला	—	पृथ्वी
लता	—	बेल	तन्या	—	बेटी

3. निम्नलिखित शब्द में इकारान्त होते हुए भी पुल्लिङ्ग हैं—

शुचि	—	पवित्र	सन्धि	—	मेल
अरि	—	शत्रु	भूपति	—	राजा
पति	—	पति	वारिधि	—	समुद्र
अहि	—	साँप	अग्नि	—	आग
रवि	—	सूर्य	अतिथि	—	मेहमान
रश्मि	—	किरण	गिरि	—	पर्वत

4. निम्नलिखित इकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं—

मुक्ति	—	मोक्ष	मति	—	कमर
गीति	—	गान	कटि	—	बुद्धि
भक्ति	—	भक्ति	भूमि	—	पृथ्वी
नीति	—	नीति	रुचि	—	प्रेम

5. निम्नलिखित इकारान्त शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं—

वारि	—	जल	सक्थि	—	जंघा
अस्थि	—	हड्डी	पाणि	—	हाथ
दधि	—	दही	अक्षि	—	आँख

6. निम्नलिखित उकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग हैं—

इक्षु	—	ईख	बिन्दु	—	बूँद
पशु	—	पशु	इन्दु	—	चन्द्रमा
गुरु	—	स्वामी	विधु	—	चन्द्रमा
परशु	—	कुल्हाडा	तरु	—	वृक्ष
भानु	—	सूर्य	बन्धु	—	भाई
शिशु	—	बच्चा	सिन्धु	—	समुद्र

7. निम्नलिखित उकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं—

धेनु	—	गाय	रेणु	—	धूल
वेणु	—	वंशी			

8. निम्नलिखित उकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं—

मधु	—	शहद	वसु	—	नाग
जानु	—	घुटना	वस्तु	—	वस्तु
वसु	—	धन			

9. निम्नलिखित उकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं—

चमू	—	सेना	वधू	—	बहु
जम्बू	—	जामुन	स्वश्रू	—	सास

5 शब्द रूप
Declension

संस्कृत भाषा में कारक व वचन को प्रकट करने के लिए उस शब्द के साथ प्रत्यय को जोड़ा जाता है। इस प्रत्यय को 'विभक्ति' कहते हैं, जबकि हिन्दी भाषा में कारक व वचन को प्रकट करने के लिए उस शब्द के साथ 'ने', 'का', 'लिए' आदि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है—

उदाहरण–

संस्कृत भाषा	हिन्दी भाषा
इदं रामस्य पुस्तकम् अस्ति।	यह राम की पुस्तक है।

वह शब्द जो विभक्ति से युक्त होता है, उसे शब्द रूप कहा जाता है। संस्कृत भाषा में शब्द को उसके अन्तिम अक्षर के द्वारा पहचाना जाता है। संस्कृत में समस्त शब्द राशि को दो प्रमुख भागों में बाँटा गया है—

1. अजन्त (Ending in Vowel)— जिन शब्दों के अन्त में स्वर होता है, उन्हें 'अजन्त' कहते हैं; जैसे— मुनि, नदी, बालक इत्यादि।

2. हलन्त (Ending in Consonant)— जिन शब्दों के अन्त में व्यंजन होता है, उन्हें 'हलन्त' कहते हैं; जैसे— राजन्, चन्द्रमस्, सरित्। प्रत्येक वर्ग के अजन्त व हलन्त के तीन-तीन वर्ग होते हैं। इस प्रकार कुल छह वर्ग होते हैं।

अजन्त पुल्लिङ्ग (Ending in Vowel, Masculine)

बालकः	मयूरः	कपोतः
साधुः	शुकः	कुक्कुटः

अजन्त स्त्रीलिङ्ग (Ending in Vowel, Feminine)

माला	बालिका	नदी
लता	शाखा	जङ्घा

अजन्त नपुंसकलिङ्ग (Ending in Vowel, Neuter)

पुष्पम्	पुस्तकम्	मुखम्
पत्रम्	नेत्रम्	फलम्

हलन्त पुल्लिङ्ग (Ending in Consonant, Masculine)

राजन् (राजा) चन्द्रमस् (चन्द्रमा) विद्वस् (विद्वान्)

हलन्त स्त्रीलिङ्ग (Ending in Consonant, Feminine)

स्रज् (माला) सरित् (नदी) वाच् (वाणी)

हलन्त नपुंसकलिङ्ग (Ending in Consonant, Neuter)

पयस् (दूध) अहन् (दिन) मनस् (मन)

संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। प्रत्येक में तीन वचन होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शब्द के इक्कीस (21) रूप होते हैं। सम्बोधन को मिलाने पर कुल 24 रूप बनते हैं। विभक्ति से युक्त शब्द 'शब्द रूप' कहे जाते हैं।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कुछ शब्दों के शब्द रूप—

अजन्त पुल्लिङ्ग (Ending in Vowel, Masculine)
अकारान्त (Ending in अ)

1. बालक (Boy)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः (बालक ने)	बालकौ (दो बालकों ने)	बालकाः (सब बालकों ने)
द्वितीया	बालकम् (बालक को)	बालकौ (दो बालकों को)	बालकान् (सब बालकों को)
तृतीया	बालकेन (बालक से बालक के द्वारा)	बालकाभ्याम (दो बालकों से दो बालकों द्वारा)	बालकैः (सब बालकों से सब बालकों द्वारा)
चतुर्थी	बालकाय (बालक के लिए)	बालकाभ्याम् (दो बालकों के लिए)	बालकेभ्यः (सब बालकों के लिए)
पञ्चमी	बालकात् (बालक से)	बालकाभ्याम् (दो बालकों से)	बालकेभ्यः (सब बालकों से)
षष्ठी	बालकस्य (बालक का)	बालकयोः (दो बालकों का)	बालकानाम् (सब बालकों का)
सप्तमी	बालके (बालक में)	बालकयोः (दो बालकों में)	बालकेषु: (सब बालकों में)
संबोधन	हे बालक! (हे बालक!)	हे बालकौ ! (हे बालको!)	हे बालकाः! (हे सब बालको!)

इकारान्त (Ending in इ)

2. मुनि (Muni)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
संबोधन	हे मुनेः!	हे मुनी!	हे मुनयः!

अन्य शब्द— कवि, यति, रवि, कपि, नृपति (राजा)।

उकारान्त (Ending in उ)

3. शिशु (Child)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशूभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पञ्चमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
षष्ठी	शिशोः	शिशवोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिशवोः	शिशुषु
संबोधन	हे शिशोः!	हे शिशू!	हे शिशवः!

अन्य शब्द— भानु, विधु, गुरु, साधु, केतु।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग (Ending in Vowel, Feminine) अकारान्त (Ending in आ)

4. रमा (Rama)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमाया	रमाभ्याम्	रमाभिः

चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
संबोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

अन्य शब्द— वीणा, सीता, गदा।

5. नदी (River)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
संबोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

अन्य शब्द— जननी, सखी, पुत्री, मृगी।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग (Ending in Vowel, Neuter)
अकारान्त (Ending in अ)

6. फल (Fruit)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
संबोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानिः!

अन्य शब्द— जल, वदन, वन, पुस्तक, मुख, कमल।

सर्वनाम शब्द (Pronouns)

छात्र ध्यान रखें कि सर्वनाम शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में अलग-अलग होते हैं तथा उनमें संबोधन नहीं होता।

7. तद् पुल्लिङ्ग (He, Masculine)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

8. तद् स्त्रीलिङ्ग (She, Feminine)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभिः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

9. तद् नपुंसकलिङ्ग (That, Neuter)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

छात्रों ने देखा होगा कि नपुंसकलिङ्ग में सर्वनाम शब्दों के रूप के भी तृतीया से सप्तमी तक पुल्लिङ्ग सर्वनाम शब्दों के रूप समान होते हैं।

10. एतद् पुल्लिङ्ग (He, Masucline)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

11. एतद् स्त्रीलिङ्ग (She, Feminine)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

12. एतद् नपुंसकलिङ्ग (That Neuter)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

13. अस्मद् (मैं – I)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्

तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

14. युष्मद् (तुम – You)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

संख्या (Numbers)

1.	एक	One
2.	द्वि	Two
3.	त्रि	Three
4.	चतुर्	Four
5.	पञ्च	Five
6.	षट्	Six
7.	सप्त	Seven
8.	अष्ट	Eight
9.	नव	Nine
10.	दश	Ten
11.	एकादश	Eleven
12.	द्वादश	Twelve
13.	त्रयोदश	Thirteen
14.	चतुर्दश	Fourteen
15.	पञ्चदश	Fifteen
16.	षोडश	Sixteen
17.	सप्तदश	Seventeen
18.	अष्टादश	Eighteen
19.	नवदश	Ninteen
20.	विंशति	Twenty

शब्द रूपों का प्रयोग

1. राम घर जाता है।	रामः गृहं गच्छति।
2. बालक पुस्तक पढ़ता है।	बालकः पुस्तकं पठति।
3. बच्चे खेलते हैं।	बालकाः क्रीडन्ति।
4. मैं दूध पीता हूँ।	अहं दुग्धं पिबामि।

5.	तुम कहाँ जाते हो ?	त्वं कुत्र गच्छसि ?
6.	हमारा घर शहर में है।	अस्माकं गृहं नगरे अस्ति।
7.	तुम्हारा नाम क्या है ?	तव किं नाम अस्ति ?
8.	यह राजा का महल है।	अयं राज्ञ: प्रासाद: अस्ति।
9.	ये दो फल हैं।	इमे द्वे फले स्त:।
10.	उसके पिता डॉक्टर हैं।	तस्य पिता चिकित्सक: अस्ति।
11.	वृक्ष पर तोते बैठे हैं।	वृक्षे शुका: तिष्ठन्ति।
12.	जंगल में पशु घूमते हैं।	वने पशव: भ्रमन्ति।
13.	नदी में मगरमच्छ हैं।	नद्यां मकरा: सन्ति।
14.	गंगा हिमालय से निकलती है।	गंगा हिमालयात् प्रभवति।
15.	मेरे पिताजी बनारस में रहते हैं।	मम पिता वाराणस्यां वसति।
16.	मैं घर से बाहर जा रहा हूँ।	अहं गृहात् बहि: गच्छामि।
17.	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
18.	वे बाज़ार जाते हैं।	ते हट्टं गच्छन्ति।
19.	गीता चंद्रमा को देखती है।	गीता चन्द्रमसं पश्यति।
20.	घोड़े दौड़ते हैं।	अश्वा: धावन्ति।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखिए—

फल	—	पञ्चमी	_____	मुनि	—	षष्ठी	_____
रमा	—	सप्तमी	_____	शिशु	—	तृतीया	_____

2. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ये दो फल हैं। _____

(ख) तुम्हारा क्या नाम है ? _____

(ग) तुम कहाँ जा रहे हो ? _____

(घ) नदी में मगरमच्छ हैं। _____

(ङ) जंगल में पशु घूमते हैं। _____

(च) मेरे पिता डॉक्टर हैं। _____

(छ) वृक्ष पर बन्दर हैं। _____

(ज) पेड़ से पत्ते गिरते हैं। _____

6 धातु-रूप
Root Form

जिन शब्दों के द्वारा किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है वे शब्द क्रिया (Verb) कहलाते हैं।

उदाहरण–

रामः गच्छति।	(राम जाता है।)
अहं फलं खादामि।	(मैं फल खाता हूँ।)
त्वं कुत्र गच्छसि ?	(तुम कहाँ जाते हो ?)

उपर्युक्त वाक्यों में गच्छति, खादामि, गच्छसि इत्यादि धातु रूप हैं अर्थात् वचन और विभक्ति इत्यादि से युक्त क्रियाएँ हैं।

धातु— दो प्रकार की होती हैं—

1. सकर्मक— जिन धातुओं में कर्म साथ रहता है उन्हें 'सकर्मक' धातु कहते हैं।

उदाहरण–

रामः ग्रामं गच्छति।	श्यामः पुस्तकं पठति।
देवः जलं पिबति।	अहं भोजनं खादामि।

उपर्युक्त क्रिया के सभी रूपों में कर्म आवश्यक रूप से प्राप्त हो रहा है, अतः ये सभी धातुएँ, (गम्, पठ्, पा, खाद्) सकर्मक हैं।

अकर्मक— जिस धातु को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे 'अकर्मक' धातु कहते हैं।

उदाहरण–

शिशुः स्वपिति।	बालकः उपविशति।
देवः तिष्ठति।	कन्या हसति।

उपर्युक्त सभी रूपों में कर्म प्राप्त नहीं है, अतः ये सभी धातुएँ (स्वप्, उपविश, स्था, हस्) अकर्मक हैं।

संस्कृत भाषा में काल (Tense) व वृत्ति (Mood) के लिए 'लकार' शब्द का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत में कुल दस लकार हैं।

1. लट् लकार	2. लिट् लकार	3. लुट् लकार	4. लेट् लकार
5. लोट् लकार	6. लङ् लकार	7. लिङ् लकार	8. लुङ् लकार
9. लृङ् लकार	10. लृट् लकार		

इस पुस्तक में केवल पाँच कालों का ज्ञान कराया गया है। लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधि लिङ्। प्रत्येक लकार में तीनों पुरुषों के क्रिया पद होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक लकार में 9 (= 3 × 3) क्रियाएँ होती हैं।

अर्थ की दृष्टि से धातुएँ दो प्रकार की होती हैं—

(क) परस्मैपदी (ख) आत्मनेपदी

धातु के पद को अन्त में जुड़ने वाले प्रत्यय के आधार पर पहचाना जाता है। कुछ धातु दोनों पदों में होती हैं। इन्हें 'उभयपदी' कहते हैं।

लकार बोधक निम्नलिखित प्रत्यय जोड़कर धातु रूप बनाए जाते हैं।

परस्मैपद के प्रत्यय (Conjugations in Parasmaipada)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	न्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	स् (:)	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	(आ) व	(आ) म

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तु, तात्	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	हि, तात्	तम्	त
उत्तम पुरुष	(आ) नि	(आ) व	(आ) म

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इत्	इताम्	इयुः
मध्यम पुरुष	इः	इतम्	इत
उत्तम पुरुष	इयम्	इव	इम

कुछ प्रमुख धातुओं के रूप—

1. भू = होना (To be)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवाव:	भवाम:

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत्
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव, भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

2. पठ् = पढ़ना (To read)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

3. हस् = हँसना (To laugh)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	हसामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहसः	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
मध्यम पुरुष	हसेः	हसेतम्	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	हसेम

4. खाद् = खाना (To eat)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यम पुरुष	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तम पुरुष	खादेयम्	खादेव	खादेम

5. गम् (गच्छ्) = जाना (To go)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गछन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

6. दृश् (पश्य्) = देखना (To see)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्ताम्	पश्येयु:
मध्यम पुरुष	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येम्	पश्येव	पश्येम

7. पा (पिब) = पीना (To drink)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबत:	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथ:	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबाव:	पिबाम:

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

8. नी (नय्) = ले जाना (To carry)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

9. गै (गाय्) = गीत गाना (To sing)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायति	गायतः	गायन्ति
मध्यम पुरुष	गायसि	गायथः	गायथ
उत्तम पुरुष	गायामि	गायावः	गायामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगायत्	अगायताम्	अगायन्
मध्यम पुरुष	अगायः	अगायतम्	अगायत
उत्तम पुरुष	अगायम्	अगायाव	अगायाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गास्यति	गास्यतः	गास्यन्ति
मध्यम पुरुष	गास्यसि	गास्यथः	गास्यथ
उत्तम पुरुष	गास्यामि	गास्यावः	गास्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायतु	गायताम्	गायन्तु
मध्यम पुरुष	गाय	गायतम्	गायत
उत्तम पुरुष	गायानि	गायाव	गायाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायेत्	गायेताम्	गायेयुः
मध्यम पुरुष	गायेः	गायेतम्	गायेत
उत्तम पुरुष	गायेयम्	गायेव	गायेम

अदादिगण

10. अस् = होना (To be)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आसताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

दिवादिगण

11. नश् = नष्ट होना (To destory)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत्
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नक्ष्यति	नक्ष्यतः	नक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नक्ष्यसि	नक्ष्यथः	नक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नक्ष्यामि	नक्ष्यावः	नक्ष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

तुदादिगण

12. लिख् =लिखना (To write)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत्
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

चुरादिगण

13. चुर् = चुराना (To steal)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत्
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट् लकार (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

वाक्यों में प्रयोग

1.	पा	—	पीना
	बच्चे ने दूध पिया।	—	शिशुः दुग्धम् अपिबत्।
2.	गम्	—	जाना
	तुम कल दिल्ली जाओगे।	—	त्वं श्वः इन्द्रप्रस्थं गमिष्यसि।
3.	दृश्	—	देखना
	तुम चाँद को देखो।	—	त्वं चन्द्रमसं पश्य।
4.	धाव्	—	दौड़ना
	हम मैदान में दौड़ेंगे।	—	वयं क्रीडाक्षेत्रे धाविष्यमिः।
5.	गर्व्	—	घमंड करना
	दुष्ट व्यर्थ में घमंड करते हैं।	—	दुष्टाः वृथा गर्वन्ति।
6.	रुद्	—	रोना
	बालक दूध के लिए रोता है।	—	बालकः दुग्धाय रोदति।
7.	वर्ष्	—	वर्षा होना
	आज वर्षा होगी।	—	अद्य वर्षा भविष्यति।
8.	नम्	—	नमस्कार करना
	शिष्य गुरु को नमस्कार करता है।	—	शिष्यः गुरुं नमति।
9.	पच्	—	पकाना
	माला भोजन पकाती है।	—	माला भोजनं पचति।
10.	वप्	—	बोना
	किसान धान बोता है।	—	कृषकः धान्यं वपति।
11.	पठ्	—	पढ़ना
	मैं पढ़ता हूँ।	—	अहं पठामि।
12.	हस्	—	हँसना
	तुम बेकार क्यों हँसते हो ?	—	त्वं वृथा किमर्थं हससि ?
13.	उपविश्	—	बैठना
	सुलेखा बैठती है।	—	सुलेखा उपविशति।
14.	धाव्	—	दौड़ना
	घोड़े दौड़ते हैं।	—	अश्वाः धावन्ति।
15.	आगम्	—	आना
	बच्चे स्कूल से आते हैं।	—	बालकाः विद्यालयात् आगच्छन्ति।

16. उपगम् — पास जाना

शिष्य गुरु के पास जाता है। — शिष्यः गुरुम् उपगच्छति।

17. प्रनी (प्रणी) — विवाह करना

सुभद्रा ने अर्जुन से विवाह किया। — सुभद्रा अर्जुनं प्राणयत्।

18. अनुभू — अनुभव होना

परिश्रमी सुख को अनुभव करता है। — परिश्रमी सुखम् अनुभवति।

19. नश् — नष्ट होना

रावण बुरे कर्मों के द्वारा नष्ट हुआ। — रावणः दुष्टाचारेण अनश्यत्।

20. पत् — गिरना

वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। — वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

21. गर्ज् — गर्जना

सिंह गरजते हैं। — सिंहाः गर्जन्ति।

22. उदस्था — उठना

मैं सुबह उठता हूँ। — अहं प्रातः उत्तिष्ठामि।

23. आनी — लाना

राम जल लाता है। — रामः जलम् आनयति।

24. लिख् — लिखना

मैं मित्र को पत्र लिखता हूँ। — अहं मित्रं पत्रं लिखामि।

25. चुर् — चुराना

सोहन मित्र का धन चुराता है। — सोहनः मित्रस्य धनं चोरयति।

26. स्पृश — छूना

राम माता के चरण छूता है। — रामः मातुः चरणौ स्पृशति।

27. तुम सब पत्र लिखो। — यूयं पत्रं लिखत।

28. तुम पत्र लिखो। — त्वं पत्रं लिख।

29. छात्र निबन्ध लिखते हैं। — छात्राः निबन्धं लिखन्ति।

30. भक्ष् — खाना

मुनि भोजन करते हैं। — मुनयः भोजनं भक्षयन्ति।

31. कथ् — कहना

ब्राह्मण ने सुंदर कथा कही। — ब्राह्मणः मनोहरां कथाम् अकथयत्।

32. चोर ने राजा का धन चुराया। — चौरः नृपस्य धनम् अचोरयत्।

33. चर् — चलना

तुम धूप में क्यों घूम रहे हो ? — त्वम् आतपे किमर्थं विचरसि ?

34. क्रीड्
मैं खेलता हूँ। — खेलना — अहं क्रीडामि।

35. वद्
राम बोलता है। — बोलना — रामः वदति।

36. चर्
बकरी चरती है। — चरना — अजा चरति।

37. दा
गाय दूध देती है। — देना — धेनु दुग्धं ददाति।

38. खाद्
सीता फल खाती है। — खाना — सीता फलं खादति।

39. यच्छ्
तुम भिखारी को धन देते हो। — देना — त्वं निर्धनाय धनं यच्छसि।

40. गम्
मैं सैर के लिए जाता हूँ। — जाना — अहं भ्रमणाय गच्छामि।

41. अर्च्
सुलेखा शिव की पूजा करती है। — पूजा करना — सुलेखा शिवम् अर्चयति।

42. त्यज्
उसने बीड़ी पीना छोड़ दिया है। — छोड़ना — सः धूम्रपानं त्यजन्ति।

43. कूज्
आकाश में पक्षी चहचहा रहे हैं। — चहचहाना — खगाः आकाशे कूजन्ति।

44. क्रीड्
बालक मैदान में गेंद से खेलते हैं। — खेलना — बालकाः क्रीडाक्षेत्रे कन्दुकेन क्रीडन्ति।

45. भ्रम्
पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती हैं। — घूमना — पृथिवी सूर्यं परितः भ्रमति।

46. हस्
अंधे को देखकर बच्चे हँस पड़े। — हँसना — अन्धं दृष्ट्वा बालाः अहसन्।

47. जीव्
प्राणी वायु से जीवित रहते हैं। — जीवित रहना — प्राणिनः वायुना जीवन्ति।

48. अर्ज्
छात्र विद्या प्राप्त करते हैं। — कमाना — छात्राः विद्याम् अर्जन्ति।

49. अधिगम्
वह धन प्राप्त करता है। — प्राप्त करना — सः धनम् अधिगच्छति।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए—

लिख्	—	लृट्	_____	गम्	—	लृट्	_____
दृश्	—	लङ्	_____	पा	—	लोट्	_____
लिख्	—	लोट्	_____	अस्	—	लृट्	_____
अस	—	लङ्	_____	गै	—	लङ्	_____
नी	—	लृट्	_____				

2. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) मेरे पिताजी जयपुर में रहते हैं।

_____

(ख) सीता ने गाना गाया।

_____

(ग) सीता राम के साथ वन में गई।

_____

(घ) मैं पत्र लिखता हूँ।

_____

(ङ) तुम मेरे लिए फल लाते हो।

_____

(च) चोर धन चुराता है।

_____

(छ) मैंने सर्प को देखा।

_____

(ज) बच्चे दूध पीते हैं।

_____

3. उचित धातु-रूपों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सः प्रतिदिनं विद्यालयं _____। (गम् + लट्)

(ख) त्वं क्रीडाक्षेत्रे _____। (क्रीड् + लङ्)

(ग) युवां ह्यः कुत्र _____ ? (गम् + लङ्)

(घ) त्वं कुत्र _____ ? (गम् + लट्)

(ङ) कृषकाः क्षेत्रेषु धान्यं _____। (वप् + लट्)

4. निम्नलिखित के रूप लङ् लकार में लिखिए—

अर्च्, लिख्, गम्, नी।

7 कारक तथा उपपद विभक्ति
Case and Case Signs

कारक (Case)

संस्कृत व्याकरण में जिन शब्दों का क्रिया से सीधा सम्बन्ध होता है और वे क्रिया करने में सहायक हों, उन्हें कारक कहते हैं।

उदाहरण–

हे छात्रा! दशरथस्य पुत्रः रामः सीतायै लंकायां रावणं बाणेन हतवान्।

प्रस्तुत वाक्य में 'हतवान्' क्रिया है। इसके करने में ये शब्द सीधे सम्बन्धित हैं।

1. रामः — कर्ता
2. रावणं — कर्म
3. बाणेन — करण
4. सीतायै — सम्प्रदान
5. लंकायाम् — अधिकरण

संस्कृत भाषा में कारकों की संख्या छः मानी गई है—

1. कर्ता	—	क्रिया को करने वाला।
2. कर्म	—	क्रिया करने में कर्ता का अभीष्ट।
3. करण	—	क्रिया करने में क्रिया का करण प्रमुख सहायक।
4. सम्प्रदान	—	जिसके लिए क्रिया की जाती है।
5. अपादान	—	क्रिया होने में जिससे कोई वस्तु अलग हो।
6. अधिकरण	—	क्रिया होने में जो आधार स्थल होता है। इन कारकों के अतिरिक्त हिन्दी भाषा में सम्बन्ध और सम्बोधन दो कारक और होते हैं।

सम्बन्ध— जिससे एक शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट हो।

सम्बोधन— जिसे सम्बोधित किया जाए अथवा पुकारा जाए। इन दोनों का क्रिया से सीधा सम्बन्ध न होने के कारण इन्हें संस्कृत व्याकरण में कारक नहीं माना जाता है। छः कारकों के लिए छः विभक्तियाँ हैं। सम्बन्ध को सूचित करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

इस प्रकार संस्कृत में छः कारक और सात विभक्तियाँ हैं—

कारक	विभक्ति	चिह्न
कर्ता	प्रथमा	ने
कर्म	द्वितीया	को

करण	तृतीया	से, के द्वारा
सम्प्रदान	चतुर्थी	को, के लिए
अपादान	पञ्चमी	से (अलग होने में)
सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण	सप्तमी	में, पर, पै
सम्बोधन	सम्बोधन	हो, रो, अरे!

कारकों का प्रयोग—

1. कर्ता कारक— क्रिया को करने वाला (स्वतन्त्र) कर्ता कारक कहलाता है। कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण–

सीता फलं खादति।	सीता फल खाती है।
अहम् पठामि।	मैं पढ़ता हूँ।
रामः गृहम् आगच्छति।	राम घर आता है।
बालिका हसति।	बालिका हँसती है।

2. कर्म कारक— कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट कारक को कर्म कारक कहते हैं।

उदाहरण–

रामः ईश्वरस्य भजनं करोति।	राम ईश्वर का भजन करता है।
त्वं पुस्तकं पठसि।	तुम पुस्तक पढ़ते हो।
चन्द्रलेखा दिल्लीं गच्छति।	चन्द्रलेखा दिल्ली जाती है।
अहं भोजनं करोमि।	मैं भोजन करता हूँ।

3. करण कारक— कर्ता के सर्वाधिक सहायक साधन को करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण–

वयं मुखे वदामः।	हम मुख से बोलते हैं।
रमा कलमेन लिखति।	रमा कलम से लिखती है।
रामेण रावणः हत।	राम के द्वारा रावण मारा गया।
रामः यानेन अयोध्यां यति।	राम यान के द्वारा अयोध्या आए।

4. सम्प्रदान कारक— जिसे कोई वस्तु दी जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण–

देव: ईश्वराय पुस्तकं ददाति।	देव ईश्वर को पुस्तक देता है।
पुता पुत्राय पुस्तकं ददाति।	पिता पुत्र को पुस्तक देता है।
राज निर्धनाय वस्त्रं ददाति।	राजा गरीब को वस्त्र देते हैं।

5. अपादान कारक— जहाँ दो वस्तुओं के बीच प्रथक् होना पाया जाता है, वहाँ अपादान कारक होता है। अपादान कारक में 'पञ्चमी' विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण–

वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।	वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।
कृषक: ग्रामात् आगच्छति।	किसान गाँव से आता है।
श्याम: सुरेषात् चतुर: अस्ति।	श्याम सुरेश से अधिक चतुर है।

6. सम्बन्ध कारक— दो वस्तुओं के मध्य सम्बन्ध दर्शाने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण–

अयं देवस्य भ्राता अस्ति।	यह देव का भाई है।
विनोदस्य पिता बहि: गच्छति।	विनोद का पिता बाहर जाता है।
इन्द्र: देवायां राजा अस्ति।	इन्द्र देवताओं का राजा है।
अहं तव भगिनी अस्मि।	मैं तुम्हारी बहन हूँ।

7. अधिकरण कारक— क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं। इसमे सप्तमी विभक्ति होती है।

उदाहरण–

वने सिंह वसति।	सिंह वन में रहता है।
खगा: वृक्षे कूजन्ति।	पक्षी पेड़ पर चहचहाते हैं।
बालका: गृहे क्रीडन्ति।	बच्चे घर में खेलते हैं।
कलके पुस्तकानि तिष्ठन्ति।	रैक में पुस्तकें हैं।

उपपद विभक्ति (Case)

किसी शब्द विशेष के कारण कई बार सामान्य विभक्ति में अन्तर पड़ जाता है। इस विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं।

उदाहरण–

1. आभित:, परित:, तथा उभयत: के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

(क) शहर के दोनों ओर जल है।	नगरं सर्वत: जलं वर्तते।
(ख) गाँव के सामने वृक्ष है।	ग्रामं अभित: वृक्षा: वर्तति।
(ग) राजमार्ग के दोनों ओर वृक्ष हैं।	राजमार्गम् उभयत: वृक्षा: सन्ति।
(घ) घर के सामने मन्दिर है।	गृहम् अभित: देवालय: अस्ति।

2. समया तथा निकषा शब्दों में द्वितीया होती है—

(क) मेरे घर के निकट नदी है। मम गृहं समया नदी वर्तते।

(ख) गाँव के निकट जल है। ग्रामम् निकषा जलम् अस्ति।

(ग) गाँव के निकट वृक्ष है। ग्रामं समया वृक्षा अस्ति।

3. सह के योग में तृतीया होती है—

(क) सीता राम के साथ जाती है। सीता रामेण सह गच्छति।

(ख) मैं राम के साथ विद्यालय जाता हूँ। अहं रामेण सह विद्यालय गच्छामि।

4. किसी अंग में विकार होने पर तृतीया विभक्ति होती है—

(क) वह आँखों से अंधा है। सः नेत्राभ्याम् अन्धः अस्ति।

5. नमः तथा स्वस्ति शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है—

(क) देवता को नमस्कार। देवायः नमः।

(ख) प्रजा का कल्याण हो। प्रजाभ्यः स्वस्ति।

(ग) यह पहलवान उस पहलवान के लिए काफी है। अयं मल्लो मल्लाय अलम्।

6. क्रोधवाची धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है—

(क) वह रावण पर क्रोध करता है। सः रावणाय क्रुधयति।

(ख) पिता पुत्र पर क्रोध करता है। जनकः पुत्रायः कुष्यति।

7. डर अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है—

(क) वह शेर से डरता है। सः सिंहात् विभेति।

(ख) बालक पिता से डरता है। बालकः जनकात् विभेति।

8. 'रक्षा करना' अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है—

(क) वह बच्चे को भालू से बचाता है। स बालकं भल्लूकात् रक्षति।

9. जिस स्थान से उत्पत्ति होती है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है—

(क) हिमालय से गंगा निकलती है। हिमालयात् गंगा प्रभवति।

(ख) ब्रह्मा से सारा संसार उत्पन्न होता है। ब्रह्मा: प्रजा: प्रजायन्ते।

10. उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करना अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है—

(क) बच्चा माता को याद करता है। शिशुः मातुः स्मरति।

11. 'स्नेह करना' अर्थ में सप्तमी होती है—

(क) गुरु शिष्य से प्यार करता है। गुरु शिष्ये स्निह्यति।

(ख) दशरथ राम से अत्यधिक स्नेह करते थे। दशरथः रामे स विशेषं स्निह्यतिस्म।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—

उभयतः _____

स्निह्यति _____

स्वस्ति _____

निकदा _____

समया _____

2. निम्नलिखित के दो-दो उदाहरण लिखिए—

सम्प्रदान कारक _____ _____

अपादान कारक _____ _____

कर्म कारक _____ _____

3. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

उपपद विभक्ति _____

_____

कारक विभक्ति _____

_____

4. निम्नलिखित को शुद्ध कीजिए—

(क) सः रामं स्मरति। _____

(ख) रामः पुत्रं स्निह्ति। _____

(ग) माता पुत्रं स्निह्ति। _____

(घ) नृपः भुजं स्निह्यति। _____

5. उचित पदों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए—

(क) रामः रावणं _____ अमारयत्। (बाण)

(ख) _____ परितः जलम् अस्ति। (गृह)

(ग) माता _____ स्निह्यति। (पुत्र)

(घ) बालकः _____ विभेति। (मार्जार)

(ङ) _____ सह तस्य भ्राता गच्छति। (देव)

8 अव्यय Indeclinable

अव्यय (Indeclinable)

संस्कृत भाषा में व्याकरण के अनुसार शब्दों में कारक लिङ्ग तथा वचन के अनुसार परिवर्तन अवश्य होता है। परन्तु कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिनके साथ कुछ नहीं जुड़ता वे कभी परिवर्तित नहीं होते तथा सभी विभक्तियों, सभी वचनों तथा सभी लिङ्गों में समान रहते हैं। उन्हें अव्यय कहते हैं।

उदाहरण–

1. च = और (And)
   राम: देव: च गच्छत:। — राम और देव जाते हैं।
2. ह्य: = बीता हुआ कल (Yesterday)
   ह्य मम भ्राता जयपुरात आगत:। — कल मेरे पिता जयपुर से आए।
3. अद्य = आज (Today)
   अद्य विद्यालस्य अवकाश: अस्ति। — आज स्कूल की छुट्टी है।
4. श्व: = आने वाला कल (Tomorrow)
   श्व: अहं इन्द्रप्रस्थ नगरं गमिष्यामि। — मैं कल दिल्ली जाऊँगा।
5. अत्र = यहाँ (Here)
   अत्र कोऽपि नास्ति। — यहाँ कोई भी नहीं है।
6. तत्र = वहाँ (Their)
   वत्स, तत्र उपविश। — बेटे, वहाँ बैठो।
7. सर्वत्र = सब जगह (Everywhere)
   ईश्वर: सर्वत्र: अस्ति। — ईश्वर सब जगह हैं।
8. कुत्र = कहाँ (Where)
   त्वं कुत्र गच्छसि ? — तुम कहाँ जाते हो ?
9. अधुना = अब (Now)
   अधुना गृहं गच्छतु। — अब आप घर जाएँ।

10. वा = या (or)

रामो वा श्यामो का तत्र गच्छतु। — राम या श्याम वहाँ जाएँ।

11. अथवा = अथवा, या (or)

देवो अथवा हरि पाठं पठेत्। — देव या हरि पाठ पढ़ें।

12. सर्वदा = सदा (Always)

सर्वदा सत्यं जयति। — सदा सत्य की विजय होती है।

13. शनैः = धीरे-धीरे (Slowly)

बालः शनैः शनैः चलति। — बालक धीरे-धीरे चलता है।

14. शीघ्रम् = जल्दी (Quickly)

त्वं शीघ्रं गृहं गच्छ। — तुम जल्दी घर जाओ।

15. अहर्निशम् = दिन-रात (Day-night)

पृथ्वी अहर्शि भ्रमति। — पृथ्वी दिन-रात घूमती है।

16. एकदा = एक बार (Once)

एकदा मम गेहं तापसः आगतः। — एक बार मेरे घर एक तपस्वी आया।

17. कुतः = कहाँ से (Where some)

कुतः आगतः भवान् ? — आप कहाँ से आए हो ?

18. एवम् = इस प्रकार (This way)

सः एवं कथयति। — वह इस प्रकार कहता है।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए—

(क) अत्र _____

(ख) शीघ्रम् _____

(ग) शनैः _____

(घ) अद्य _____

(ङ) सदा _____

(च) एकदा _____

(छ) ह्य _____

(ज) शवः _____

(झ) न _____

2. कोष्ठक में दिए हुए उचित अव्यय पद लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

कत्र, शनैः, अद्य, सर्वत्र, सदा, शीघ्रम्

(क) _____ विद्यालये उत्सवः अस्ति।

(ख) त्वं केन कारणेन _____ चलसि ?

(ग) ईश्वरः _____ वर्तते।

(घ) इयं कया _____ धावति।

(ङ) त्वं _____ वससि।

(च) पंगु _____ चलति।

9 समास Compound

समास (Compound)

जब दो या दो से अधिक शब्दों के साथ जुड़े हुए कारक बोध चिह्न को समाप्त करके एक शब्द का निर्माण किया जाता है तो उसे समास कहते हैं।

उदाहरण के लिए 'रामास्य पुत्रः' यहाँ पर राम तथा पुत्र दो शब्द हैं जिनके बीच में कारक चिह्न 'स्य' विराजमान हैं। इन शब्दों का समास करते समय 'स्य' विभक्ति को समाप्त कर दिया जाता है और 'राम' व 'पुत्र' इन दोनों शब्दों को मिलाकर 'रामपुत्रः' बनता है। इस नवीन पद को समस्त पद कहते हैं।

समस्त पद के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इसके घटक पदों के साथ विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं। उसे समास का विग्रह कहते हैं।

संस्कृत में चार समास होते हैं—

1. अव्ययीभाव 2. तत्पुरुष 3. द्वन्द्व 4. बहुव्रीहि

1. अव्ययीभाव— इस समास में पहला पद अव्यय तथा दूसरा पद संज्ञा होता है। विग्रह करते समय अव्यय समाप्त हो जाता है तथा उसका अर्थ ही शेष रहता है।

उदाहरण–

उपकृष्णम्	—	कृष्णस्य समीपम्
प्रतिदिनम्	—	दिनं दिनं प्रति
यथा शक्ति	—	शक्तिम् अनतिक्रम्य
निर्विघ्नम्	—	विघ्नानाम् अभावः

अव्ययीभाव समास का पहला पद कोई अव्यय होता है।

2. तत्पुरुष — इसका उत्तरपद प्रधान होता है। इसके निम्नलिखित भेद हैं—

(क) सामान्य तत्पुरुष– इसमें पहले पद में प्रथमा विभक्ति को छोड़कर अन्य विभक्तियाँ होती हैं तथा दूसरे पद में प्रथमा विभक्ति होती है।

उदाहरण–

शरणागतः	—	शरणम् आगतः।
सभापण्डित	—	सभायां पण्डितः।
राजपुरुष	—	राज्ञः पुरुषः।
युद्ध निपुणः	—	युद्धे निपुणः।
विद्याहीनः	—	विद्याहीनः।

(ख) कर्मधाराय तत्पुरुष– विशेषण तथा विशेष्य का समास होता है अर्थात् पहला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा होता है।

उदाहरण–

कृष्णसर्पः	—	कृष्णः सर्पः
नीलोत्पलम्	—	नीलम् उत्पलम्
कमलमुखम्	—	कमलम् इव मुखम्
चन्द्रमुखम्	—	चन्द्रम् इव मुखम्
धनश्यामः	—	घन इव श्याम्
पीताम्बरः	—	पीतं अम्बरं

(ग) द्विगु तत्पुरुष– इसमें पहला पद संख्यावाची होता है।

उदाहरण–

त्रिभुवनम्	—	त्रयाणां भुवानां समाहारः
पंचतन्त्रम्	—	पचानां तन्त्रां समाहारः
त्रिलोकी	—	त्रयाणां लोकां समाहारः
पंचामृतम्	—	पंचानाम् अमृतानां समाहारः

3. द्वन्द्व समास— इनमें दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें च शब्द के द्वारा शब्दों का विग्रह किया जाता है।

उदाहरण–

पितरौ	—	माता च पिता च
कन्दमूल फलानि	—	कन्दं च मूलं च फलं च
भीमार्जुनौ	—	भीमः च अर्जुनः च
रामकृष्णौ	—	रामः च कृष्णः च

4. बहुव्रीहि समास— इसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि अन्य पद प्रधान होता है। बहुव्रीहि समास विशेषण होता है। इससे किसी विशेष व्यक्ति की पहचान होती है।

उदाहरण–

चतुर्मुखः	—	चत्वारि मुखानि यस्य सः (ब्रह्मा)
दशाननः	—	दशः आननानि यस्य सः (रावण)
पंचाननः	—	पंच आननानि यस्य सः (शंकर)
पीताम्बर	—	पीतानि (अम्बराणि) यस्य सः (श्रीकृष्ण)

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित का विग्रह कीजिए—

रामश्यामौ _____ चतुर्मुखः _____

विद्याहीनः _____ नीलोत्पलम् _____

त्रिभुवनम् _____

2. समास बताइए—

कृष्णः सर्पः _____ क्षणं क्षणं प्रति _____

नीलम् अम्बरम् _____ सुरः च असुरः च _____

सभापण्डितः _____ दशाननः _____

3. प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए—

द्विगु समास _____

_____

द्वन्द्व समास _____

_____

4. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

समास _____

_____

समस्त पद _____

_____

विग्रह _____

_____

10 अनुवाद Translation

अनुवाद (Translation)

संस्कृत में अनुवाद करते समय निम्नलिखित नियमों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. कर्ता और क्रिया में सीधा सम्बन्ध होता है। अत: कर्ता में जिस पुरुष और वचन का प्रयोग हुआ है उसी पुरुष और वचन का प्रयोग क्रिया में होता है।

उदाहरण–

कर्ता	क्रिया	कर्ता	क्रिया
स: (प्रथम पुरुष, एकवचन)	पठति	तौ (प्रथम पुरुष, द्विवचन)	पठत:
ते (प्रथम पुरुष, बहुवचन)	पठन्ति	त्वम् (मध्यम पुरुष, एकवचन)	पठसि
यूयाम (मध्यम पुरुष, द्विवचन)	पठथ:	यूयम् (मध्यम पुरुष, बहुवचन)	पठथ
अहम् (उत्तम पुरुष, एकवचन)	पठामि	आवाम् (उत्तम पुरुष, द्विवचन)	पठाव:
वयम् (उत्तम पुरुष, बहुवचन)	पठाम:		

2. धातु पर लिङ्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अहं पठामि।	मैं पढ़ता हूँ।	त्वम् पठसि।	तुम पढ़ते हो।
	मैं पढ़ती हूँ।		तुम पढ़ती हो।
स: पठति।	वह पढ़ता है।	सा पठति	वह पढ़ती है।

3. काल के अनुसार लकार का प्रयोग किया जाता है।

अहं पाठं पठामि।	मैं पाठ पढ़ता हूँ।	(लट् लकार)
अहं पाठम् अपठम।	मैंने पाठ पढ़ा।	(लङ् लकार)
अहं पाठं पठिष्यामि।	मैं पाठ पढ़ूँगा।	(लृट लकार)

4. कारक के अनुसार विभक्ति का प्रयोग करना होता है।

राम:	(राम ने)	कर्ता
रावणं	(रावण को)	कर्म
बाणेन	(बाण के द्वारा)	करण
लंकायान्	(लंका में)	अधिकरण
अहन्	(मारा)	क्रिया

अभ्यास नं० – 1

सामान्य प्रयोग

1.	राम लक्ष्मण का बड़ा भाई था।	रामः लक्ष्मणस्य अग्रजः आसीत्।
2.	दशरथ के चार पुत्र थे।	दशरथस्य चत्वारः पुत्राः आसन्।
3.	मैं कल दिल्ली जाऊँगा।	अहं श्वः इन्द्रप्रस्थ-नगरं गमिष्यामि।
4.	हम दोनों प्रदर्शनी देखेंगे।	आवां प्रदर्शनी द्रक्ष्याव।
5.	यह एक लड़का है।	अयं एकः बालकः अस्ति।
6.	यह देव की कलम है।	इयं देवस्य लेखनी अस्ति।
7.	यह मेरी पुस्तक है।	इदं मम पुस्तकं अस्ति।

अभ्यास नं० – 2

प्रथम पुरुष

1.	सुलेखा पढ़ती है।	सुलेखा पठति।
2.	वह खाता है।	सः खादति।
3.	राम फल नहीं खाता है।	रामः फलानि न भक्षयति।
4.	बालक दूध पीता है।	बालकः दुग्धं पिबति।
5.	सिंह गरजते हैं।	सिंहाः गर्जन्ति।
6.	कोयल कुहुकती है।	पिकाः कूजन्ति।

अभ्यास नं० – 3

मध्यम पुरुष

1.	तुम सब खेलते हो।	यूयं क्रीडथ।
2.	तुम दोनों गाँव गए।	युवां ग्रामम् अगच्छतम्।
3.	तुम पाठ पढ़ते हो।	त्वं पाठ पठसि।
4.	तुम हँसते हो।	त्वं हससि।
5.	तुम दोनों क्यों हँसते हो ?	युवां किमर्थं हस्थः ?

अभ्यास नं० – 4

उत्तम पुरुष

1.	हम दोनों बाजार जाते हैं।	आवां हट्टं गच्छाम्।
2.	हम शहर जाते हैं।	वयं नगरं गच्छाम।
3.	हम दोनो खेलते हैं।	आवां क्रीडाव।
4.	मैं घर जाता हूँ।	अहं गृहं गच्छामि।
5.	मैं वृक्ष पर चढ़ता हूँ।	अहं वृक्षं आरोहामि।
6.	मैं पलंग पर सोता हूँ।	अहं पयंकम् अधिशते।

अभ्यास नं० - 5

लट् लकार

1.	वे दोनों कार्य करते हैं।	तौ कार्यं कुरुत:।
2.	देव गुरु की सेवा करता है।	देव: गुरुं सेवते।
3.	बादल गरजते हैं।	मेघा: गर्जन्ति।
4.	हम दोनों बाजार जाते हैं।	आवाम् आपणं गच्छाव:।
5.	राम पुस्तक पढ़ता है।	राम: पुस्तकं पठति।
6.	मैं बगीचे में काम करता हूँ।	अहम् उद्याने क्रीडाद्यी।

अभ्यास नं० - 6

लङ् लकार

1.	हमने फल खाए।	वयं फलानि अभक्षयाम्।
2.	राम विद्यालय गया।	राम: विद्यालयं आगच्छत।
3.	सरोवर में कमल शोभा देता था।	सरोवरे कमले अशोभत्।
4.	लेखा ने दही खाया।	लेखा तक्रम् अभक्षयत्।
5.	माता ने भोजन पकाया।	माता भोजनं अपचत्।
6.	नदियों में जल बढ़ता था।	नदीषु जलं अवर्धत्।

अभ्यास नं० - 7

लृट् लकार

1.	तुम कहाँ जाओगे ?	त्वं कुत्र गमिष्यसि ?
2.	क्या तुम फिल्म देखोगे ?	किं त्वं चलचित्रं द्रक्ष्यसि ?
3.	वृक्ष से पत्ते गिरेंगे।	वृक्षात् पत्राणि पतिष्यन्ति।
4.	कल मंगलवार है।	श्व: मंगलवार: भविष्यति।
5.	हम कल चिड़ियाघर जाएँगे।	वयं श्व: जन्तुशालां गमिष्याम:।
6.	मनोज आज पत्र लिखेगा।	मनोज: अद्य पत्रं लेखिष्यति।

अभ्यास नं० - 8

लोट् लकार (आज्ञा, निमंत्रण आदि)

1.	तुम आज ही जाओ।	त्वम् अद्यैव गच्छ।	(आज्ञा)
2.	शीघ्र जाओ।	शीघ्रं गच्छ।	(आज्ञा)
3.	ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।	ईश्वर त्वां रक्षतु।	(प्रार्थना)
4.	सदा सच बोलो।	सदा सत्यं वद्।	(प्रेरणा)
5.	लालच मत करो।	लोभ न कुरु।	(प्रेरणा)

अभ्यास नं० – 9

संख्यावाची शब्द

1.	चार बच्चे खेलते हैं।	चत्वार: बालका: क्रीडन्ति।
2.	ये पाँच फल हैं।	एतानि पंच फलानि सन्ति।
3.	दो हाथी जल पीते हैं।	द्वौ गजौ जलं पिबत:।
4.	एक बालिका हँसती है।	एका कन्या हसति।
5.	दो फूल खिलते हैं।	द्वे पुष्पे विकसथ:।
6.	तीन बच्चे खेलते हैं।	त्रय बालका: क्रीडन्ति।

अभ्यास नं० – 10

कारक तथा उपपद

1.	तुम्हारा क्या नाम है ?	तव नाम किम् ?
2.	ईश्वर संसार को बनाता है।	ईश्वर: संसारं रचयति।
3.	तुम कानों से बहरे हो।	त्वं कर्णाभ्यां बधिर: अस्ति।
4.	हँसो मत।	अलं हसितेन।
5.	नगर के बाहर विद्यालय है।	नगरात् बहि: विद्यालय: अस्ति।
6.	झगड़ा मत करो।	अलं विवादेन।
7.	आकाश से ओले गिरे।	आकाशात् करका: अपतन्।
8.	राजा ब्राह्मण को गाय देता है।	नृप: ब्रह्मणाय गां यच्छति।
9.	मन्दिर के चारों ओर बगीचा है।	देवालयं पारित: वाटिका अस्ति।
10.	घर के सामने पीपल का पेड़ है।	गृहं अभित: अश्वत्थ: अस्ति।
11.	बच्चा बन्दर से डरता है।	बालक: वानरात् विभेति।
12.	कृष्ण मक्खन चुराता है।	कृष्ण: नवनीतं चोरयति।

अभ्यास नं० – 11

विविध

1.	माता-पिता सदा पूजनीय होते हैं।	पितरौ सदा पूजनीयौ भवत:।
2.	साँप बिल में रहता है।	सर्प: बिले वसति।
3.	भिखारी धूप में खड़ा है।	भिक्षुक: आपते तिष्ठति।
4.	मैंने उसे देखा।	अहं तम् पश्यत्।
5.	छात्र सत्य बोलेंगे।	छात्रा: सत्यं वदिष्यति।
6.	पशुओं ने जल पिया।	पशव: जलम् अपिबन्।
7.	बच्चे को मत पीटो।	बालं न ताड्य।
8.	राम और मोहन जाते हैं।	राम: श्याम: च गच्छत:।

9. नदियाँ पर्वतों से निकलती हैं। नद्यः पर्वतेभ्यः निर्गच्छति।
10. विद्या के बिना सुख कहाँ ? विद्यां बिना सुखं कुत्रः ?
11. माता ने बच्चे को चाँद दिखाया। माता पुत्रं चन्द्रमसम् अदर्शयत्।
12. तुम मन्दिर जाओ। त्वं मन्दिरं गच्छ।
13. बच्चा माँ के साथ बाजार जाता है। बालः माता सह आपणं गच्छति।
14. आप हमारे भाई हैं। भवान् अस्माकं भ्राता अस्ति।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) हम लोग निर्धन हैं।
(ख) वृक्ष पर पक्षी चहचहा रहे हैं।
(ग) वह तुम्हारा भाई है।
(घ) मेरे गाँव के सामने स्कूल है।
(ङ) बनारस धार्मिक शहर है।
(च) नदी गाँव के दोनों ओर बहती है।
(छ) देव अध्ययन के लिए विदेश गया।
(ज) द्वार पर मोहन खड़ा है।
(झ) पाण्डव पाँच भाई थे।
(ञ) मैंने अपने पिता को पत्र लिखा।
(ट) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
(ठ) मोहन कहाँ खड़ा है।
(ड) राजकुमारियाँ क्या कर रही हैं।
(ढ) हम सैर करने जा रहे हैं।
(ण) राजा चोर पर क्रोध करता है।
(त) सच बोलो।
(थ) आचार्य को देवता मानो।
(द) ये फल मीठे हैं।
(ध) मेरे छोटे भाई का नाम मनोज है।
(न) घोड़े दौड रहे हैं।
(प) सूर्य पूर्व दिशा में उदित होता है।
(फ) कृष्ण रंग से काला था।
(ब) माता बच्चे से स्नेह करती है।
(भ) हम प्रतिदिन काम करते हैं।
(म) मेरा नाम सोमदत्त है।

11 पत्र लेखन
Letter Writing

पत्र-लेखन (Writing)

पत्र लेखन एक कला है इससे व्यक्तित्व की पहचान होती है। अत: पत्र लेखन में छात्रों को निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखना चाहिए—

1. पत्र अपने विचारों को प्रकट करने का सशक्त साधन है। अत: पत्र की भाषा सरल एवं स्वभाविक होनी चाहिए।
2. पत्र में सभी आवश्यक बातों का उल्लेख होना चाहिए, अनावश्यक बातों का नहीं।
3. कार्यालय से सम्बन्धित पत्र के आरम्भ में 'सेवायम्' पद लिखना चाहिए।
4. पत्र के अन्त में 'भवदीय' पद लिखना चाहिए।
5. पत्र में अपना और पाने वाले का पता स्पष्टतया लिखना चाहिए।
6. पत्र में दिनांक का उल्लेख आवश्यक करें।

1. विद्यालय से अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र (Application for leave)

सेवायाम्,

प्राचार्य:

सनातन धर्म पाठशाला:

मयराष्ट्र नगरम्।

श्रीमन्त: अहं दिनद्वयात् ज्वरेण पीडितोऽस्मि। अनेन सार्धं कासादिवकारै: सविशेपं व्यपितोऽहम् ।

अत: पाठशालाम् आगन्तुं न शक्नोमि।

श्रीमंतां सेवानां निवेदनं अस्ति यद् दिनत्रयस्य (जुलाई विशंतारिकाण: द्वाविशंति पर्यन्तम्) अवकाश: दानीय:।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्य:,

सुरेश कुमार:

षष्ठ श्रेणी

दिनांक .....

2. शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना पत्र (Application for fee Concession)

सेवायाम् प्राचार्या:,

दिल्ली नगर निगम

प्राथमिक विद्यालय।

ईस्ट कैलाश नगर दिल्ली-31

महोदया,

निवेदनम् अस्ति यद् अहं भवतां विद्यालये पंचम कक्षायां पठामि। मम पिता एकस्मिन् कार्यालये कार्यं करोति। मम परिवारे सप्त जना: सन्ति। तेषां निर्वाहो मम जनकस्य वेतनेन कठिनतया भवति।

प्रार्थ्यते यद् महम पूर्णशुल्क मुक्तिं दत्वा अनुग्रहं कुर्वन्तु।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्या,

कु० हर्षा

षष्ठम् श्रेणी

दिनांक .....

3. भाई को पत्र (A letter to brother)

अग्रवाल कन्या पाठशाला,

भिवानी

मण्डलम्

प्रिय: भ्रात:

नमस्ते।

अद्य मया तव पत्रं प्राप्तम्। सर्वं शोभनम् अस्ति। मम अध्ययनम् अपि शोभनं वर्तते। अग्रिमे मासे अस्मांक परीक्षा भविष्यति अत: सर्वा छात्रा: अध्ययने लग्ना सन्ति।

परीक्षाया: पश्चात् अहं गृहम् आगमिष्यामि पितृभ्यां प्रणाम:।

भवदीया भगिनी,

सुरेखा

षष्ठम् श्रेणी

दिनांक .....

12 निबन्ध लेखन
Essay Writing

1. संस्कृत भाषा (Sanskrit Language)

संस्कृत भाषा प्राचीनतमा भाषा अस्ति। इयं देववाणी अपि कथ्यते। संस्कृते चत्वार: वेदा:, षड् शास्त्राणि, एकादश-उपनिशद: सन्ति।

संस्कृत भाषायाम् अनेके कवय: अभवन्। एषु कालिदासादय: प्रसिद्धा: सन्ति। ते संस्कृतस्य गौरवं वर्धयन्ति। संस्कृत-व्याकरणं सर्वांग पूर्णम्। अस्या: भाषाया: वर्णमाला वैज्ञानिकि अस्ति। अतएव अस्या: प्रचार: देशे-विदेशे सर्वत्र अस्ति। संस्कृतभाषा श्रेष्ठा भाषा अस्ति। संस्कृत भाषायां भारतीय संस्कृति: निहिता।

2. मम् विद्यालय (My School)

अहं राजकीय विद्यालये पठामि। अहं षष्ठम् कक्षायां पठामि। मम विद्यालये इन्द्रप्रस्थ नगरे स्थित: अस्ति। विद्यालस्य परिसर: सुविस्तृत: अस्ति। अस्य भवनं महत्रमणीयं अस्ति। महानगरे विद्यालस्य अतीव प्रतिष्ठा अस्ति।

प्रतिवर्षे अस्य परीक्षाफलं प्रशसनीय भवति। न केवलं अध्ययन-अध्यापने, अपितु क्रीडाक्षेत्रे अहं विद्यालय: अत्युच्चं स्थानम् अलभत्। अस्य मध्ये अति सुन्दरम् उपवनं अस्ति। तस्मिन् उपवने सुन्दराणि कुसुमानि विकसन्ति। विद्यालये एक: विशाल: पुस्तकालय: अपि अस्ति। अस्मिन् विद्यालये पठने वयं गर्वम् अनुभवाम:।

3. विद्यायाः महत्त्वम् (Importance of Knowledge)

विद्या सर्वश्रेष्ठं सर्वप्रधानं च धनं भवति। संसारस्य अन्यानि सर्वाणि धनानि व्यये कृते नश्यन्ति परं विद्याधनं व्यये कृते वर्धते। विद्यां विना नरः पशुतुल्यः भवति। विद्या अज्ञानन्धकारं दूरी करोति। ज्ञानेन मनुष्यस्य प्रतिष्ठा जायते। 'विदेशेषु धनं विद्या' इति सत्यम् अस्ति। विद्याहीनः नरः सर्वभौतिकसाधनैः सम्पन्नोऽपि सुखी न भवति। विद्यया एव नरः उचितानुचिस्य भेदं कर्तु शक्नोति। विद्या एव सर्व विधेन सुखस्य साधनम् अस्ति।

4. परोपकार (A Nobel Deed)

परस्य उपकारः परोपकारः। सज्जनाः एव परोपकारिणः सन्ति। तेषां जीवनं परोपकाराय भवति। ते परेषां हितं साधयन्ति। सज्जनाः परेषां दुखं न सहन्ते। ते परेषां दुखस्य निवारणं कुर्वन्ति।

भारतवर्षे अनेके परोपकारिणः जनाः जाताः। कर्ण-शिबिहरिश्चन्द्रादयः अत्र सविशेषं उल्लेखनीयाः सन्ति। ते परोपकाराय अनेकानि कष्टानि असहन्त। ते परोपकाराय स्वकीय प्रणान् अपि अत्यजन्।

न केवलं मनुष्याः अपितु जडपदार्थाः अपि परोपकारं कुर्वन्ति। नद्यः परोपकारायः वहिन्त। वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। मेद्याः परोपकाराय वर्षन्ति।

सत्यमेव- 'परोपकाराय इदं शरीरं'।

13 कहानी लेखन
Story Writing

1. नील शृगालः

कश्मिंश्चिद् अरण्ये एकः शृगालः प्रतिवसति समः। सः एकदा स्वेच्छया नगरोपान्ते भ्राम्यन् कुक्कुरेभ्यो भीतः राजकस्य नीलभाण्डे पतितः। ततोऽसौ वनं गत्वा आत्मानं नीलवर्णमलोक्य अचिन्तयत्— अहम् इदानीम् उत्तमवर्णः तदाहं स्वकीयोत्कर्षं किं न साध्यामि ? इत्यालोच्य शृगालान् आहूय सः उक्तवान्— 'मां-भगवती वन देवता स्वहस्तेन अरण्यराज्ये अभिषिक्तवती। तद् अद्यारभ्य अरण्ये अस्मदाज्ञया व्यवहारः कार्यः। शृगालाश्च तं विशिष्टवर्णम् अवलोक्य प्रणम्य अवदन्— यथा आज्ञापयति देवः। इत्ययेनैव सर्वे क्रमेण अरण्यवसिनः तस्य अधिपत्यं स्वीकृतवन्तः।

शनैः शनैः सः व्याघ्रः सिंहदीन् उत्तमजनान् प्राप्य स्वजातीयान् दूरीकृतवान्। ततौ दुखितान् शृगालान् अवलोक्य केनचिद् वृद्धशृगालेन एतत्प्रतिज्ञातम्— यथा अयं व्याघ्रदिभिः परिचितौ भवति तथा उपायं करिष्यामः। यतः ऐते व्याघ्रदयः अस्य वर्णमात्रेण विप्रलब्धाः सन्तः एवं शृगालं अज्ञात्वा राजानं मन्यन्ते ततः सायंकाले सर्वे तत्र सम्मिल्यः एकदैवः महारावम् अकुर्वन्। तं शब्दं श्रुत्वा स नीलशृगालोऽपि जाति स्वभावात् तै सह शब्दम् अकरोत्। तथा कृते सति सिहैः सः ज्ञातः हतश्च। यतः—

य स्वभावो हि यस्यासित स नित्यम् पुरतिक्रः।
श्वा यदि क्रियते राजा सः किं नाश्नात्युपानहम्।।

2. सूर्य आत्माः जगतः

प्रातः सूर्य उदेति। सूर्योदेन सह दिवसारम्भः भवति। सूर्योदयात् प्राक् उषः कालो भवति, यो हि अतीव रमणीयः भवति। सर्वे ग्रहाः सूर्य पराक्रमन्ति। पृथिवी अपि सूर्य परिक्रमति। पृथिव्याः सूर्यस्यं परिक्रमाकालः सवंत्सरकालः। अतः सूर्य एव सूर्यस्यैव नमान्तराणि-भास्करः, प्रभाकरः, दिवाकरः, भानुः, आदित्यः, अर्क रविप्रभृतिनी अनेकानि सन्ति।

सूर्य एव अस्माकं सर्वव्यवहाराणां प्रवर्तकः वर्तते। दिवसे एक जीवाः कार्याणि कुर्वन्ति। वनस्पतयः सूर्यप्रकाशं बिना न जीवन्ति। छात्राः अध्यापक अन्ये कर्मचारिणः च पाठशालां कार्यशालां च दिवसे एव गच्छन्ति। भारतीयाः देवपूजनं यज्ञं च दिवसकाले एव कुर्वन्ति। ग्रीष्मर्तौ सूर्यः प्रचण्डं तपति। तदानीं सः सागरस्य जलं शोषयति। तस्य जलस्य सूर्योष्मा वाष्पीकरणं भवति। तेन मेघाः प्रदुर्भवन्ति। वर्षर्तौ ते मेघाः वर्षन्ति। कृषिकार्यं सम्भवति, शस्यनि प्ररोहन्ति। जीवाः शस्यान्नानि खादति। अतः सूर्य जीवनस्यधारः। वैद कथितम्- सूर्यः आत्मा जगतः तस्थुषाणं इति।

सूर्य ऊजार्याः अखण्ड भण्डरम् अस्ति। सूर्यात् वयं प्रकाशं उष्णतां च प्राप्नुमः। अतः एव सर्वेजनाः सूर्यम् उष्णरयिमं कथयन्ति। सूर्यप्रकाशे वयम् अयानि नक्षत्राणि न पश्यामः।

सूर्य प्रकाशेन रोगकृमीणां नाशं भवति। सूर्यात् ऊर्जां गृहीत्वा यन्त्रचालनम् अपि सम्भवति। सूर्यप्रकाशे सप्तवर्णानां मेलनम् अस्ति।

जन्तुशाला

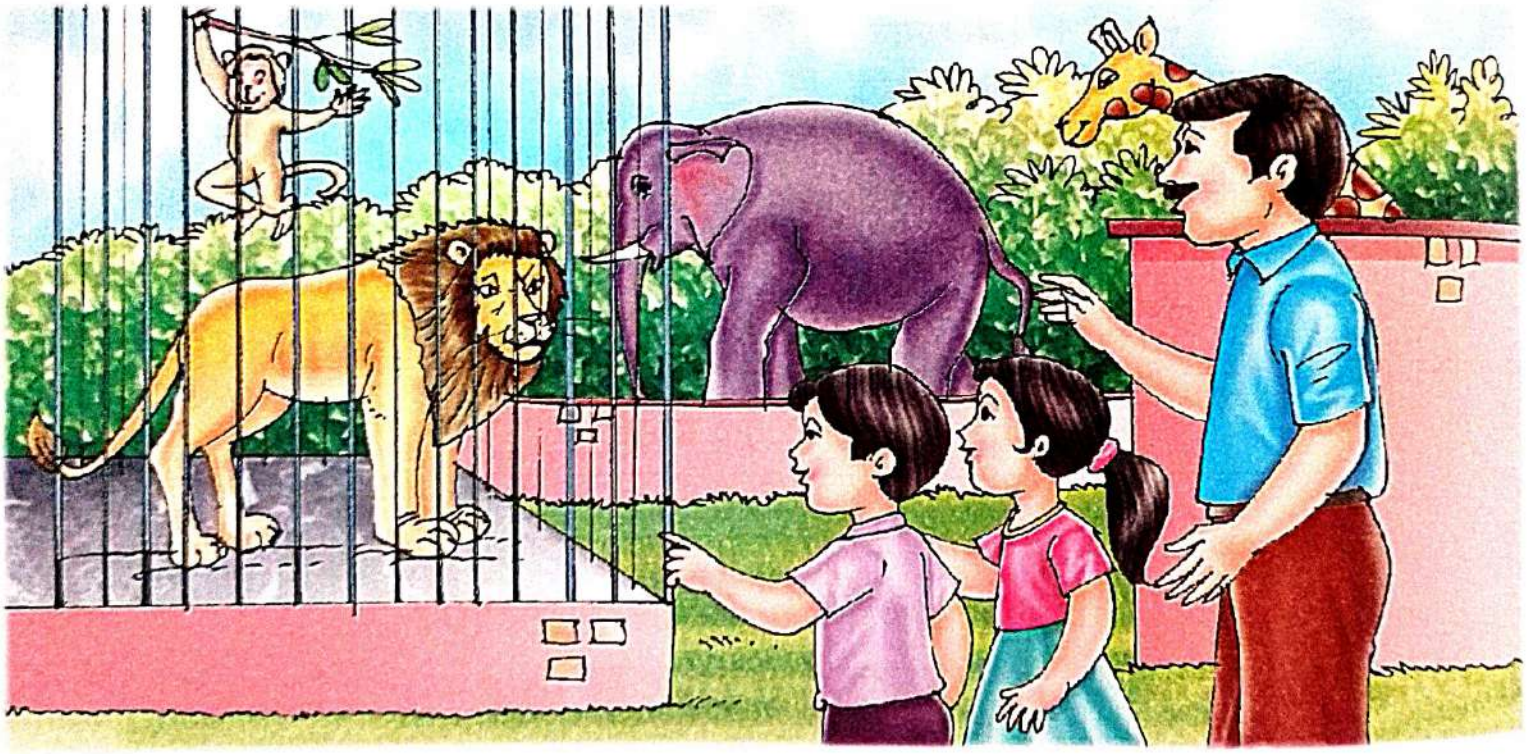

अहं दिल्ली नगरे वसामि। अत्र अनेकानि दर्शनीयस्थानानि। तेषु जन्तुशाला अत्यधिकं प्रसिद्धा अस्ति। एषा प्रधानमार्गे तिष्ठति। एषा विस्तृता अस्ति।

जन्तुशालायाम् अनेके प्रभागाः सन्ति। पशु प्रभागे बहवः पशवः सन्ति। एषु भल्लूकाः, सिंहाः, मृगाः, वानराश्च सन्ति। पक्षिवर्गे शुकाः, मयूराः, पिकाः सन्ति। ते सर्वे पृथक् पृथक् पञ्जरेषु स्थिताः सन्ति।

अनेके पक्षिणः विदेशात् आनीताः सन्ति।

जलचरवर्गे मत्स्याः, मकराः, बकाः दर्शकानां हृदयम् आवर्जयन्ति। बकाः जले योगिनः इव ध्यानमग्नः तिष्ठन्ति। वस्तुतः एषा जन्तुशाला रमणीया अस्ति।

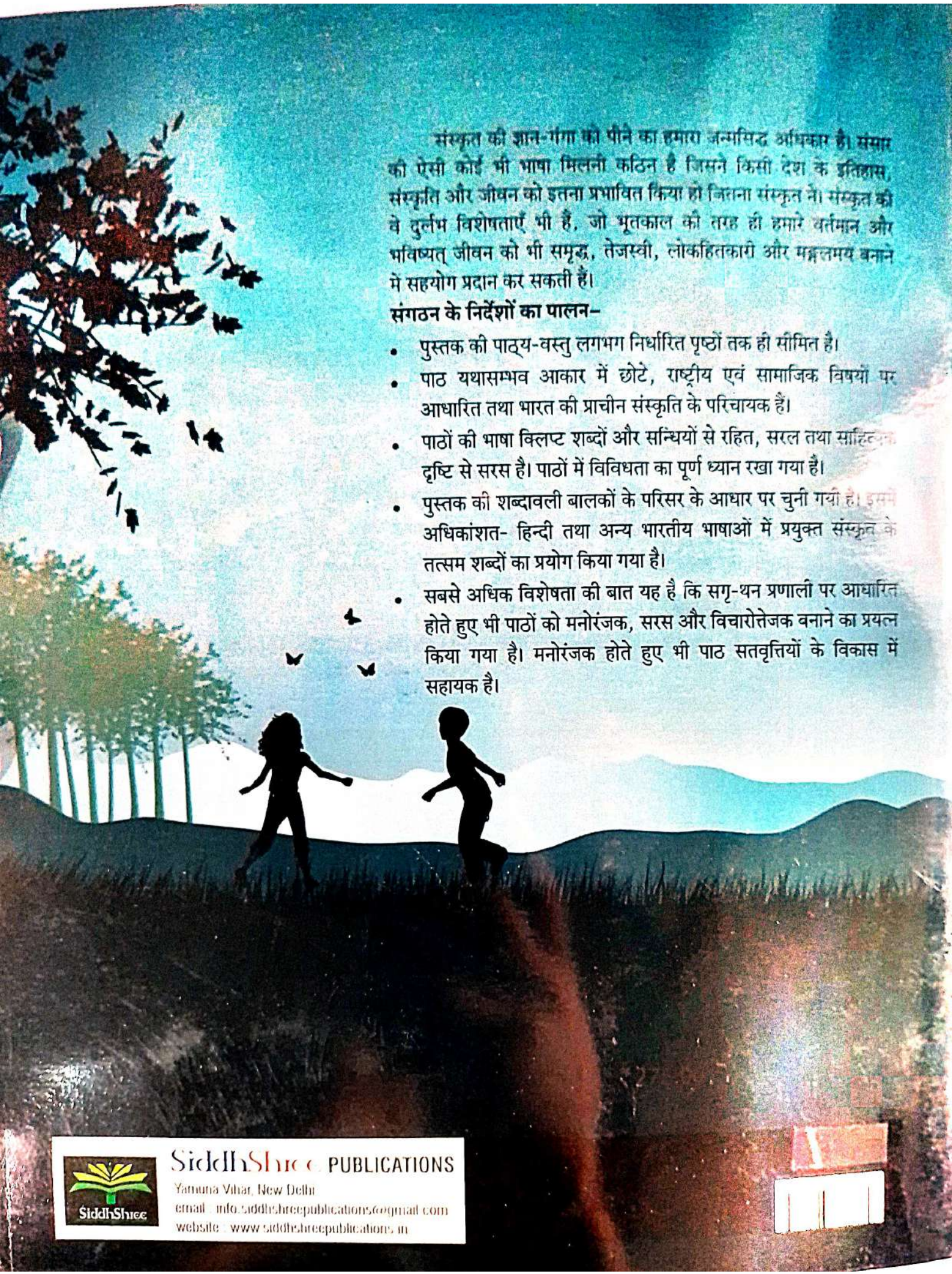

संस्कृत की ज्ञान-गंगा को पीने का हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। संसार की ऐसी कोई भी भाषा मिलनी कठिन है जिसने किसी देश के इतिहास, संस्कृति और जीवन को इतना प्रभावित किया हो जितना संस्कृत ने। संस्कृत की वे दुर्लभ विशेषताएँ भी हैं, जो भूतकाल की तरह ही हमारे वर्तमान और भविष्यत् जीवन को भी समृद्ध, तेजस्वी, लोकहितकारी और मङ्गलमय बनाने में सहयोग प्रदान कर सकती हैं।

संगठन के निर्देशों का पालन–

- पुस्तक की पाठ्य-वस्तु लगभग निर्धारित पृष्ठों तक ही सीमित है।
- पाठ यथासम्भव आकार में छोटे, राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों पर आधारित तथा भारत की प्राचीन संस्कृति के परिचायक हैं।
- पाठों की भाषा क्लिप्ट शब्दों और सन्धियों से रहित, सरल तथा साहित्य दृष्टि से सरस है। पाठों में विविधता का पूर्ण ध्यान रखा गया है।
- पुस्तक की शब्दावली बालकों के परिसर के आधार पर चुनी गयी है। इसमें अधिकांशत- हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- सबसे अधिक विशेषता की बात यह है कि सगृ-थन प्रणाली पर आधारित होते हुए भी पाठों को मनोरंजक, सरस और विचारोत्तेजक वनाने का प्रयत्न किया गया है। मनोरंजक होते हुए भी पाठ सतवृत्तियों के विकास में सहायक है।

SiddhShree PUBLICATIONS
Yamuna Vihar, New Delhi
email : info.siddhshreepublications@gmail.com
website : www.siddhshreepublications.in